अंकुर

राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़– 160017

110–111वाँ संयुक्तांक अप्रैल 2018 से सितंबर 2018

कुर्सियों पर बाँए से :

श्री वेद प्रकाश, लेखा अधिकारी, श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार, श्रीमती अश्वती वी. एस., वरिष्ठ उपमहालेखाकार, श्री विनय कुमार गर्ग, सहायक लेखा अधिकारी।

खड़े हुए बाँए से :

श्री फूल सिंह, क.हि.अ., श्रीमती एकता, व.हि.अ.,

श्री महेन्द्र सिंह, क.हि.अ.

अंकुर

राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़– 160017

110–111वाँ संयुक्तांक अप्रैल 2018 से सितंबर 2018

प्रकाशन विवरण

मुख्य संरक्षक	:	श्री फ़ैसल इमाम महालेखाकार (लेखा व हकदारी) पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़–160017
संरक्षक	:	श्रीमती अश्वती वी.एस. वरिष्ठ उपमहालेखाकार (प्रशासन)
मुख्य संपादक	:	श्री वेद प्रकाश लेखा अधिकारी
संपादक	:	श्री विनय कुमार गर्ग सहायक लेखा अधिकारी
संपादन सहयोग	:	श्रीमती एकता वरिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री फूल सिंह कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री महेन्द्र सिंह कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक श्री यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज कनिष्ठ हिन्दी अनुवादक
मुख पृष्ठ	:	अमृतसर में स्थित स्वर्ण मंदिर
अंक	:	110 से 111वां संयुक्तांक
प्रतियां	:	तीन सौ प्रतियां
प्रकाशक	:	राजभाषा कार्यान्वयन समिति, कार्यालय महालेखाकार (लेखा व हकदारी), पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़– 160017
मूल्य	:	राजभाषा के प्रति निष्ठा।
मुद्रक	:	कैपिटल ग्राफिक्स एस.सी.ओ. 133–135, सैक्टर–17 सी, चण्डीगढ़।

अनुक्रमणिका

❖ प्रकाशक विवरण		2
❖ मुख्य संरक्षक का संदेश		4
❖ संपादकीय		5
❖ पाठकों के पत्र		6–8

आलेख

❖ स्वच्छ भारत स्वस्थ शरीर	वेद प्रकाश	10–11
❖ अंकुर पत्रिका का विमोचन	भगत सिंह	12–13
❖ महात्मा गांधी एवं स्वच्छता	यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज	14–15
❖ सुखी जीवन जीने की कला	रंजु महाजन	16–18

कविता

❖ बहुत दिन हो गए	रिंकू कश्यप	24
❖ झूठा सच	सुनील कुमार गुप्ता	25
❖ सरहद	महेन्द्र सिंह	26
❖ अच्छाई का चलन मानो...	विनय कुमार गर्ग	27
❖ कविता	अनूप डांगरा	28

कहानी

❖ लापता	जसविंदर शर्मा	30–34
❖ मेरी प्यारी भाभी	विनय कुमार गर्ग	35–37
❖ अजनबी हमसफर की अधूरी कहानी	संजय कुमार आर्यन	38–39

कार्यालयीन गतिविधियां

❖ हिन्दी पखवाड़ा 2018	40
❖ कार्यालय समाचार, खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियां	41
❖ नियुक्तियां, पदोन्नतियां एवं सेवा निवृत्तियां।	42–46
❖ कार्यालय में राजभाषा हिन्दी प्रयोग संबंधी मुख्य तथ्य	47

नोट : 1. पत्रिका में प्रकाशित रचनाओं में व्यक्त विचार रचनाकारों के निजी विचार हैं। रचना की मौलिकता तथा अन्य किसी विवाद के लिए रचनाकार स्वंय जिम्मेदार हैं।
2. सभी पाठकों से आगामी अंक हेतु रचनाएं आमंत्रित हैं।

संदेश

कार्यालय द्वारा हिंदी पत्रिका "अंकुर" के 110 से 111वां संयुक्तांक के प्रकाशन पर मुझे अत्यंत हर्ष का अनुभव हो रहा है। मैं कार्यालय के सभी रचनाकारों, पाठकों तथा संपादक मण्डल के सभी सदस्यों को हार्दिक शुभकामनाएँ देता हूँ जिनके अथक प्रयासों के परिणामस्वरूप यह पत्रिका सृजनात्मकता के क्षेत्र में निरन्तर अग्रसर है।

मुझे खुशी है कि हमारा कार्यालय गृह मंत्रालय तथा मुख्यालय के सभी निर्देशों का पालन करते हुए राजभाषा हिंदी की विकास यात्रा में अपनी सकारात्मक भूमिका निभा रहा है। कार्यालयीन गतिविधियों के अंतर्गत लक्ष्य प्राप्ति के साथ–साथ हिंदी पत्रिका "अंकुर" का प्रकाशन इस दिशा में हमारा सतत प्रयास है। राजभाषा हिंदी के प्रचार–प्रसार में विभागीय पत्रिकाओं ने ऐतिहासिक भूमिका निभाई है। "अंकुर" पत्रिका के माध्यम से ही हम कार्यालय के समस्त कार्य–कलापों की जानकारी पूरे विभाग को प्रेषित कर पाये हैं। पत्रिका ने कार्यालय कर्मियों में हिंदी के प्रति ऐसी निष्ठा का संचार किया है कि नियमित व्यस्तताओं के बावजूद भी वे अपनी रचनाओं के माध्यम से रचनात्मकता के क्षेत्र में नये आयाम स्थापित कर रहे हैं।

मैं कार्यालय कर्मियों की इस सहभागिता के लिए आभार प्रकट करता हूँ और आशा करता हूँ कि भविष्य में भी सब अपना सहयोग इसी प्रकार देते रहेंगे।

शुभकामनाओं सहित!

फ़ैसल इमाम

महालेखाकार (लेखा व हकदारी),

पंजाब एवं यूटी, चण्डीगढ़–160017

सम्पादक की कलम से...

विभागीय पत्रिका "अंकुर" का नवीन अंक सुधि पाठकों को समर्पित करने में जो गौरव व सम्मान है उसके लिए मैं ईश्वर का एवं सभी पाठकों का कृतज्ञ हूँ। अपनी मातृभाषा व राजभाषा हिंदी की सेवा में आत्मसंतुष्टि का जो अनूठा अहसास होता है वह अवर्णनीय है।

राजभाषा हिंदी एक बहुत ही वैज्ञानिक भाषा है। हिंदी के सृजनकर्ताओं पर हमें सदैव गर्व होना चाहिए। परंतु आज स्थिति यह है कि सरकारी कार्यालयों के राजभाषा अधिकारियों को भारत सरकार के आदेशानुसार, नियत वार्षिक लक्ष्यों की प्राप्ति हेतु, सदैव संघर्षशील रहने पर भी परिणाम उत्साहवर्धक कम ही देखने को मिलते हैं। हालांकि बुनियादी समस्या कोई नहीं है क्योंकि हमारे देश में लगभग 60 करोड़ लोग हिंदी भाषी हैं, इस लिहाज से लक्ष्यों की प्राप्ति स्वतः ही हो जानी चाहिए। किंतु हिंदी भाषा के साथ दोयम दर्जे का व्यवहार और विदेशी भाषा के प्रति मोह भारतवर्ष को दिशाहीन कर रहा है। संविधान लागू होने के करीब 70 वर्षों के पश्चात भी राजभाषा को अपनाने में दोहरी मानसिकता अवश्य ही चिंतनीय है। विश्वविख्यात भारतीय साहित्यकार श्री भारतेंदु हरिश्चंद्र की पंक्तियां "निज भाषा उन्नति अहै, सब उन्नति को मूल" आज भी अक्षरशः प्रासंगिक व अनुकरणीय है। हमारी राजभाषा हिंदी का प्रादुर्भाव संस्कृत भाषा से हुआ है जिसका लोहा कंप्यूटर जगत भी मान चुका है। बस आवश्यकता है कि हम भी हिंदी भाषा को आदर से, मान सम्मान से व दिल से पुनः अपने बोलचाल में, पत्राचार में व विचारों में स्थान दें और हिंदी की उन्नति में अपना सकारात्मक योगदान दें, निश्चय ही यह एक महान राष्ट्र सेवा होगी।

हमारी गृह पत्रिका "अंकुर" भी इसी दिशा में एक छोटा सा योगदान है, जो पाठकों की सकारात्मक प्रतिक्रियाओं व सुझावों के फलस्वरुप निरंतर श्रेष्ठतर होती जा रही है, जिसके लिए अंकुर परिवार, हमारे मुख्य संरक्षक महोदय का सुधि पाठकों का व पत्रिका के खेवनहार अर्थात सभी रचनाकारों का हृदय से आभारी है और हमारी यही प्रार्थना है कि भविष्य में भी अपना प्यार व आशीर्वाद इसी प्रकार बनाएं रखें। इन्ही शुभकामनाओं के साथ यह नवीन अंक समर्पित है।

जय हिन्दी! जय भारत!

विनय कुमार गर्ग
सहायक लेखा अधिकारी

पाठकों के पत्र

आपके कार्यालय की विभागीय हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 108–109 वें संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई। इस पत्रिका में संग्रहित सभी रचनायें प्रभावशाली एवं उच्च कोटि की हैं। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा हिन्दी के सृजनात्मक उत्थान हेतु आपके द्वारा किया गया प्रयास सराहनीय है।

पत्रिका के इस अंक में सम्मिलित किया गया कुमारी खूशबू का लेख 'भारत–चीन संबंध श्री शिवांश कश्यप (बाल रचनाकार) की कविता 'राष्ट्र भाषा हिन्दी', श्री जसविंदर शर्मा की कहानी 'अम्मा क्यों रोती है' तथा श्री संजय कुमार आर्यन की कहानी 'दोष किसका' प्रशंसनीय हैं। पत्रिका के सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को बधाई व पत्रिका की उत्तरोत्तर प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

कल्याण अधिकारी
कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) राजस्थान

आपके कार्यालय की हिंदी पत्रिका 'अंकुर' के 108–09वें संयुक्तांक की प्रति प्राप्त हुई, सहर्ष धन्यवाद। पत्रिका में समाविष्ट सभी लेख , कविताएं, उत्कृष्ट एवं ज्ञानवर्धक हैं। विशेषकर श्री यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज की रचना 'भाषा विवाद', श्री महेन्द्र सिंह की रचना 'अकेला हुआ इन्सान', श्री सुनील कुमार गुप्ता की रचना 'ऋतुओं की कहानी उनकी जुबानी', श्री जसविंदर शर्मा की रचना 'अम्मा क्यों रोती है', श्री संजय कुमार आर्य की रचना 'दोष किसका' आदि उल्लेखनीय है।

पत्रिका की साज–सज्जा उत्तम है। पत्रिका के मुख पृष्ठ पर चंडीगढ़ में स्थित शहीदी स्मारक का चित्र ध्यान आकर्षित करता है। कार्यालयीन चित्रों ने पत्रिका की सुंदरता को और निखारा है। पत्रिका के कुशल तथा सफल संपादन हेतु संपादक मंडल को हार्दिक बधाई। पत्रिका के निरंतर उज्ज्वल भविष्य हेतु मेरी हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय, महालेखाकार (ले.प.) –2 महाराष्ट्र, नागपुर।

पाठकों के पत्र

आपके द्वारा प्रेषित हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 108–109वें संयुक्तांक की एक प्रति प्राप्त हुई। पत्रिका का मुद्रण एवं प्रकाशन उत्तम है। रचनाओं के साथ मुद्रित छायाचित्रों का प्रस्तुतीकरण सार्थक एवं विषयानुकूल है। संकलित समस्त लेख एवं रचनाएं सरस एवं पठनीय हैं। विशेष रुप से श्रीमती रंजू महाजन का लेख 'भारत की ऐतिहासिक नगरी–अमृतसर, श्री महेन्द्र सिंह की कविता 'अकेला हुआ इन्सान', श्रीमती एकता धानिया की कविता 'वक्त तो लगता है' तथा श्री संजय कुमार आर्यन की कहानी 'दोष किसका' आदि प्रशंसनीय हैं। बाल रचनाकारों की रचनाएं उत्कृष्ट एवं प्रशंसनीय हैं।

पत्रिका के कुशल संपादन हेतु हार्दिक बधाइयां। कार्यालय परिवार पत्रिका की अविरल प्रगति एवं उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है।

सहायक लेखा अधिकारी

कार्यालय, महालेखाकार (ले. व ह.)– प्रथम उ.प्र., इलाहाबाद।

हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 108–109वें अंक की प्रति प्राप्त हुई, धन्यवाद। पत्रिका में समाहित संपूर्ण रचनाएं ज्ञानवर्धक तथा उपयोगी लगी। पत्रिका के माध्यम से राजभाषा के उन्नयन हेतु विभाग का यह कार्य स्तुत्य एवं सराहनीय है। पत्रिका का कलेवर पृष्ठ अत्यंत आकर्षक है। पत्रिका के अंदर की झलकियां अत्यंत सराहनीय है।

पत्रिका के सफल संपादन एवं रचनाओं के चयन, संकलन तथा प्रकाशन हेतु संपादक तथा सम्पादकीय परिवार के सभी सदस्यों को बधाई और पत्रिका के उत्तरोत्तर प्रगति हेतु हार्दिक शुभकामनाएं।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय, महालेखाकार (सा. व सा. क्षे.ले.प.),
कर्नाटक, बैंगलूरु।

पाठकों के पत्र

आपके कार्यालय की हिन्दी पत्रिका 'अंकुर' के 108–09वें सयुंक्तांक की प्रति प्राप्त हुई। चंडीगढ़ स्थित शहीदी पार्क तथा कैपिटल कॉपलेक्स से सुसज्जित पत्रिका का मुखपृष्ठ अत्यंत सुंदर एवं मनोहारी है। पत्रिका में समाविष्ट सभी रचनाएं जैसे, भारत की ऐतिहासिक नगरी अमृतसर, भारत–चीन संबंध, जल ही जीवन है लेख एवं वक्त तो लगता है, भिखारी की व्यथा, राष्ट्रभाषा हिन्दी, इन्सान और अंकुर कविताएं तथा अम्मा क्यों रोती है तथा दोष किसका है कहानियां अत्यंत रोचक व उत्कृष्ट हैं। अंकुर पत्रिका का विमोचन, गणतंत्र दिवस समारोह की झलकियों के चित्र बहुत सुंदर हैं। हिन्दी के प्रचार–प्रसार के लिए व पत्रिका के प्रकाशन हेतु आपका पत्रिका परिवार बधाई का पात्र है।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य की शुभकामनाओं सहित।

वरिष्ठ लेखापरीक्षा अधिकारी
प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा)–3 महाराष्ट्र, मुम्बई।

पत्र क्रमांक– हिन्दी कक्ष/अंकुर हि.प./2018–19/197–216 दिनांक 20.08.2016 के तहत आपके कार्यालय द्वारा प्रकाशित हिन्दी पत्रिका का आवरण पृष्ठ एवं आन्तरिक साज–सज्जा सुंदर एवं प्रशंसनीय है। पत्रिका में प्रकाशित काहानियां, लेख एवं कविताएं प्रशंसनीय , रोचक एवं ज्ञानवर्धक हैं।

विशेष रूप से सुनील कुमार गुप्ता द्वारा लिखा गया कविता 'ऋतुओं की कहानी उनकी जुबानी' एवं यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज द्वारा लिखा गया लेख 'भाषा विवाद' बहुत ही प्रशंसनीय एवं ज्ञानवर्धक हैं। पत्रिका के कुशल संपादन के लिए संपादक मंडल एवं सभी रचनाकारों को हार्दिक बधाई।

पत्रिका के उज्ज्वल भविष्य हेतु ढेर सारी शुभकामनाएं।

भवदीय,

वरिष्ठ लेखा परीक्षा अधिकारी (हिन्दी)
कार्यालय, प्रधान महालेखाकार
(सामान्य एवं सामाजिक क्षेत्र लेखा परीक्षा),
पश्चिम बंगाल, कोलकाता।

आलेख

110–111वाँ संयुक्तांक अप्रैल 2018 से सितंबर 2018

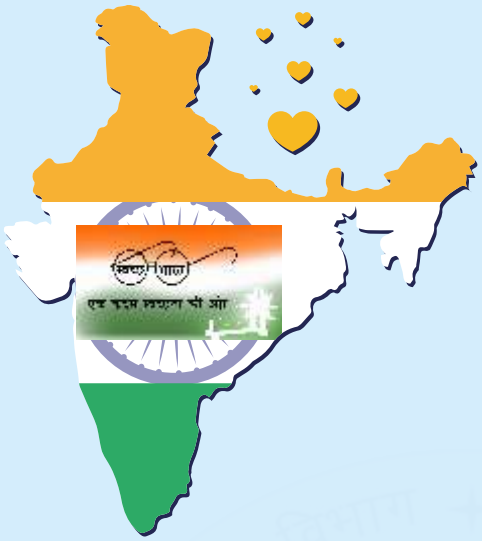

स्वच्छ भारत स्वस्थ शरीर

वेद प्रकाश

स्वच्छता और स्वास्थ्य का एक दूसरे से घनिष्ठ संबंध है। स्वच्छ भारत का सपना उस समय तक साकार नहीं हो सकता जब तक हमारा शरीर भीतरी रूप से स्वस्थ न हो। आयुर्वेद में स्पष्ट रूप से कहा गया है– 'पहला सुख निरोगी काया'। हिन्दू, इस्लाम, क्रिश्चियन, पारसी, बौध, जैन और यहूदी धर्म में भी स्वच्छता को पवित्रता का प्रतीक बताया गया है। सभी धार्मिक संस्कारों और कर्मकांडो में स्वच्छता को प्रारंभिक अवस्था बताया गया है। पूरे विश्व को आरोग्यता प्रदान करने का संकल्प ही भारतीय संस्कृति का मूल आधार है। 'सर्वे भवंतु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामया' का अर्थ यही है कि सभी सुखी और स्वस्थ हों। स्वस्थ शरीर में ही स्वस्थ मन और स्वस्थ मस्तिष्क का वास होता है।

सभी प्रकार के रोग शारीरिक गंदगी से ही उत्पन्न होते हैं। विश्व स्वास्थ्य संगठन की रिपोर्ट का यह आंकड़ा चौंकाने वाला है कि साफ–सफाई न होने के कारण, भारत में प्रति व्यक्ति औसतन 6500 रुपये प्रति वर्ष बीमारियों पर खर्च होते हैं। अगर यह हम मानकर चलें कि 125 करोड़ भारतीयों में से केवल 25 करोड़ ही तरह–तरह के रोगों से ग्रस्त हैं तो आप कल्पना कर सकते हैं कि केवल बीमारियों पर ही कितना खर्च होता होगा।

शरीर को स्वच्छ न रखने से दाद, खाज–खुजली, कुष्ठ रोग, त्वचा के अनेक रोग, मुंहासे, शरीर में सूजन, त्वचा का जलना, त्वचा से मवाद निकलना, बवासीर, सिर के बालों का असमय झड़ना, फंगल इंफेक्शन, हैपेटाइटिस ए व बी, पेट के अनेक रोग, टायफायड, डेंगू, चिकनगुनिया, मलेरिया, वायरल, दांतों के रोग, मसूड़ों के रोग, विभिन्न प्रकार की एलर्जी सहित अनेक प्रकार के रोग होते हैं। यह रोग धीरे–धीरे पूरे शरीर की प्रतिरोधक क्षमता को समाप्त कर देते हैं जिससे व्यक्ति खतरनाक रोगों की चपेट में आ जाता है।

जिस प्रकार हम अपने निवास स्थान, कार्यालय, वस्त्रों आदि की सफाई करते हैं। उसी प्रकार शरीर की भीतरी सफाई का होना भी अति आवश्यक हैं। शरीर में गंदगी बढ़ने से अनेक प्रकार के बैक्टीरिया, जर्म, कीटाणु आसानी से हमारे शरीर के विभिन्न अंगो में पहुंच जाते हैं और शरीर को खोखला करना शुरु कर देते हैं। गंदगी पैदा करने वाले घातक वायरस तेजी से हमारे रक्त में घुल जाते हैं और अनेक प्रकार के रोगों का कारण बनते हैं। ये बैक्टीरिया इतने घातक होते हैं कि शरीर में घुसकर डी.एन.ए. तक भी बदल सकते हैं। खून की नलियों में बहने वाले खतरनाक टॉक्सिन व कीटाणु ट्यूमर और कैंसर पैदा कर देते हैं। जब ये टॉक्सिन शरीर के महत्वपूर्ण अंगो को नष्ट कर देते हैं तो ब्रेन में सूजन आ जाती है और रीढ़ तथा जोड़ों में दर्द होने

लगता है। लीवर, गुर्दे ,फेफड़े और दिल धीरे–धीरे कार्य करना बंद कर देते हैं, जिससे व्यक्ति पूरी तरह रोगों की चपेट में आ जाता है और उसकी मौत भी हो सकती है।

अमेरिका के नेशनल इंस्टीट्यूट आफ हेल्थ और सेंटर फॉर डिसीज कंट्रोल एवं प्रिवेंशन का कहना है कि माईक्रो वायरल टॉक्सिन अनेक रोगों का मूल कारण होता हैं जिसका डॉक्टरों को बहुत लंबे समय के बाद पता चलता है। यह टॉक्सिन ऐसे खतरनाक बैक्टीरिया होते हैं कि जो सांस से, हवा से, खान–पान से, छूने से, संबंध बनाने से हमारे शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और पूरे प्रतिरोधी तंत्र (इम्यून सिस्टम) पर कब्जा कर लेते हैं। इन घातक कीटाणुओं से शुगर, हार्ट ब्लड प्रेशर हार्ट अटैक, ब्रेन स्टीक, किडनी का फेल होना, हैपेटाइटस बी, कैंसर, अर्थराइटिस, ब्रोकाइटिस, डैंड्रफ तथा अनेक प्रकार की खाद्य एलर्जियां होती हैं। अमेरिका के नेशनल इंस्टीट्यूट आफ हेल्थ और सेंटर फॉर डिसीज कंट्रोल एवं प्रिवेंशन का कहना है कि कीटों में गालो वायरस एक ऐसा विषाणु है जो शरीर में मौजूद पैंक्रियाज के बीटासेल्स को नष्ट कर देता है। इसके कारण इंसुलिन बनना बंद हो जाता है। इंसुलिन की कमी के कारण खून में मौजूद ग्लूकोज का सिस्टम बिगड़ जाता है। जब ग्लूकोस रक्त में ही जमा होने लगता है तो ब्लड शुगर का स्तर बढ़ जाता है। यह शुगर पेशाब और खून की नलियों में जमा होने लगता है जिसमे दिल के दौरे का खतरा बढ़ जाता है।

अमेरिका के सी.डी.एस. संस्थान के अनुसार फंगस और बैक्टीरिया 90 प्रतिशत शारीरिक रोगों को जन्म देता है जिनके नाम सी.डी.एस. वेबसाइट में देखे जा सकते हैं। ये फंगस और बैक्टीरिया नाक, कान, आंख, मुंह और त्वचा से शरीर में प्रवेश कर जाते हैं और लीवर, किडनी, पैंक्रियाज, गॉल ब्लैडर, हार्ट, लंग्स, नर्वस सिस्टम और नपुंसकता जैसे रोगों को जन्म देता है। यह फंगस इतना खतरनाक होता है कि छोटे से स्थान पर ही एक लाख अंडे दे देते हैं जो लगातार बढ़कर 15 लाख से भी अधिक प्रकार के बैक्टीरिया को जन्म देते हैं। गंदगी से होने वाला यह बैक्टीरिया पेट में इंफेक्शन का कारण होता है। यह बैक्टीरिया छोटी आंत में मौजूद प्रोटीन को पचाने वाली एंजाइम को नष्ट कर देता है। इसके कारण हमारे शरीर में प्रोटीन एमीनो एसिड पचना बंद हो जाता है जिससे गेहूं तथा अन्य प्रोटीनिक चीजों जैसे दूध, बादाम, मक्का आदि की एलर्जी पैदा होती है। आयुर्वेद में इसे उदर रोग का नाम दिया गया है जो बहुत घातक होता है।

उपरोक्त वर्णित तथ्यों का संबंध स्वच्छ भारत अभियान से भी है। राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी जी के 145 वें जन्म दिवस पर स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की गई। यह अभियान केवल केंद्र सरकार का ही नहीं है, इसमें हर भारतीय को अपना योगदान देना होगा। स्वच्छ भारत का निर्माण करने में हम सब को सक्रिय भूमिका निभानी होगी। इस अभियान के अंतर्गत पूरे भारत में 11 करोड़ 11 लाख शौचालय बनाने की योजना है ताकि खुले में शौच को पूर्ण रुप से बंद किया जा सके। ग्राम पंचायतों के माध्यम से ठोस एवं तरल अपशिष्ट के अच्छे प्रबंधन की व्यवस्था को सुचारु रुप से कार्यान्वित करने के प्रयास किये जाएं ताकि गांवों में और आस–पास के परिवेश को प्रदूषण मुक्त बनाया जा सके। हमारा यह भी कर्तव्य बनता है कि हम अपने आस–पास के परिवेश को स्वच्छ बनाने के लिए हर संभव प्रयास करें। राष्ट्रपिता महात्मा गांधी जी ने कहा था कि "जो परिवर्तन आप दुनिया में देखना चाहते हैं वह सबसे पहले अपने आप में लागू करें"। यह सब तभी संभव हो सकता है जब हम सब मिलकर इस दिशा में अपना सहयोग दें। अगर ऐसा होता है तो वो दिन दूर नहीं जब भारत दुनिया के श्रेष्ठतम स्वच्छ देशों की अग्रिम पंक्ति में आ खड़ा होगा। गांधी जी के 150 वें जन्म दिवस के अवसर पर यह उन्हें सबसे उपयुक्त श्रद्धांजलि होगी।

अतः हमें अपने शरीर को पूजा स्थल की तरह मानकर सदैव स्वच्छ रखना चाहिए। जब हम सब शारीरिक रुप से पूर्णतया स्वस्थ होगें तभी हम एक स्वच्छ और सशक्त भारत के निर्माण का सपना साकार कर सकेगें।

'अंकुर' पत्रिका का विमोचन

भगत सिंह

महालेखाकार कार्यालय पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ में प्रत्येक वर्ष की भाँति 15 अगस्त 2018 को स्वतंत्रता दिवस बड़ी धूम–धाम से मनाया गया। वरिष्ठ लेखा अधिकारी के नाते मैं भी समारोह में शामिल हुआ। कार्यक्रम महालेखाकार महोदय द्वारा झंडा फहराने व अभिभाषण देने के साथ आरम्भ हुआ। कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों द्वारा विभिन्न देश भक्ति गीत, कविता, नाटक आदि की बेहतरीन प्रस्तुति दी गई। इस शुभ अवसर पर हिन्दी अनुभाग द्वारा विभागीय पत्रिका 'अंकुर' के 108–109वें संयुक्तांक का विमोचन भी करवाया गया जो मुख्य आकर्षण का केन्द्र रहा।

विभागीय पत्रिका 'अंकुर' के 108–109वें संयुक्तांक का विमोचन महालेखाकार महोदय श्री फैसल इमाम के कर कमलों द्वारा हुआ। हिन्दी अनुभाग द्वारा बताया गया कि यह अंक एक नए कलेवर में प्रस्तुत हुआ है। महालेखाकार महोदय के आदेश व संपादक मंडल के सकारात्मक प्रयास से यह अंक अपने नए रंगीन रूप में आपके सामने प्रस्तुत है। प्रतियां अधिकारियों/ कर्मचारियों के मध्य वितरित की गई। मैंने भी जिज्ञासावश पत्रिका की एक प्रति ली और पत्रिका को निरीक्षण भरी नजरों से देखा और पाया कि वास्तव में यह अंक एक बहुत बड़ें परिवर्तन के साथ प्रकाशित हुआ है।

पिछले अंकों की तुलना करें तो यह अंक बहुत ही अलग है। सभी रचनाओं में भावानुसार चित्रों को समाहित किया गया है। पृष्ठ गुणवत्ता में गुणात्मक वृद्धि हुई है। इस अंक में बच्चों की रचनाएं भी समाहित की गई हैं जो कि पत्रिका को विविधात्मक रुप प्रदान करता है। पत्रिका की सम्पूर्ण सामग्री को अलग–अलग भागों में सुव्यवस्थित ढंग से बांटा गया है जैसे महालेखाकार का संदेश, सम्पादकीय, पाठकों के पत्र, आलेख, कविता, कहानी, कार्यालय समाचार आदि।

इसके अतिरिक्त एक और परिवर्तन जो मैंने देखा कि पत्रिका में हिन्दी के निर्धारित लक्ष्यों को भी शामिल किया गया है जो कि बहुत ही महत्वपूर्ण एवं सार्थक कदम है। इससे पाठकों को हिन्दी पत्राचार के निर्धारित लक्ष्यों की जानकारी मिल जाती है जिससे हिन्दी कार्य में बढ़ावा मिलेगा जो पत्रिका का लक्ष्य भी है। मेरे पास बैठे अन्य कार्मिक साथी भी पत्रिका देखकर प्रसन्न थे तथा पत्रिका के नए अंक की प्रशंसा कर रहे थे। सभी के मुंह से यही निकल रहा था कि वाह क्या बात है?

विमोचन समारोह के दौरान 'अंकुर पत्रिका' के रंगीन नवीन अंक को नए कलेवर में देखकर खुशाी की मुद्रा में श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार एवं अन्य अधिकारीगण

मेरे मन में पत्रिका के उस अंक का चित्र सामने आने लगा जब इसने अपनी यात्रा आरंभ की थी। वो पुराने तरीके से की हुई टाईपिंग व छपाई भी श्वेत–श्याम होती थी। वह भी एक अच्छा प्रयास था। उस दिन भी सभी हिन्दी अनुभाग की प्रशंसा कर रहे थे। सभी पत्रिका के इस पहले अंक को कार्यालय की उपलब्धि बता रहे थे। सारा कार्यालय खुशी मना रहा था। परंतु उस अंक और आज के इस अंक में आकाश–पाताल का अंतर था। यह अंक रंग–बिरंगे पंख लगाकर सज–धज कर सबको 21वीं सदी में आकर्षित कर रहा था। सभी संपादक मंडल को बधाई दे रहे थे। मैं भी पत्रिका को देखकर मन ही मन प्रफुल्लित हो रहा था और सोच रहा था कि कितनी परिवर्तित हो गई है ये पत्रिका।

सच में 'अंकुर' पत्रिका ने अभूतपूर्व तरक्की की है। इसकी विकास यात्रा अविरल गति से जारी है। यह पत्रिका महालेखाकार कार्यालय (ले. व ह.) पंजाब व चण्डीगढ़ का गौरव है। कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों की साहित्यिक प्रतिभा ने इसे और भी मूल्यवान बना दिया है। सभी रचनाकार व संपादक मंडल व कार्यालय राजभाषा कार्यान्वयन समिति के सभी सदस्य जिसके अध्यक्ष कार्यालय के मुखिया श्री फैसल इमाम, महालेखाकार हैं बधाई के पात्र हैं। सही अर्थों में विभागीय पत्रिका 'अंकुर' के विमोचन समारोह ने स्वतंत्रता दिवस को सार्थक बना दिया।

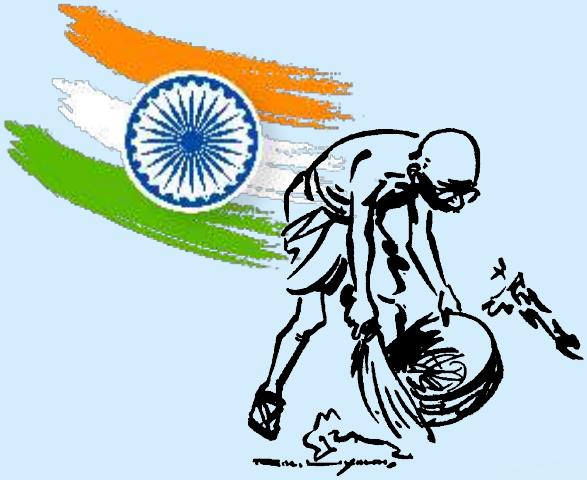

महात्मा गांधी एवं स्वच्छता अभियान

यादव जगदीश चन्द्र मुनिराज

प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी ने 02 अक्टूबर, 2014 को महात्मा गांधी की 145वीं जयंती पर स्वच्छ भारत अभियान की शुरुआत की। साथ ही, पूरे देश के समक्ष यह लक्ष्य रखा कि हम राष्ट्रपिता को उनकी 150वीं जयंती पर एक स्वच्छ भारत का उपहार दें। स्वच्छ भारत अभियान सफाई करने की दिशा में प्रतिवर्ष 100 घंटे के श्रमदान के लिए लोगों को प्रेरित करता है। स्वच्छ भारत अभियान का उद्देश्य केवल आस–पास की सफाई करना ही नहीं है अपितु नागरिकों की सहभागिता से अधिक–से–अधिक पेड़ लगाना, कचरा मुक्त वातावरण बनाना, शौचालय की सुविधा उपलब्ध करवाकर एक स्वच्छ भारत का निर्माण करना है। प्रधानमंत्री ने जोर देते हुए कहा कि भारत को स्वच्छ बनाने का काम किसी एक व्यक्ति या अकेले सरकार का नहीं है, यह काम तो देश के 125 करोड़ लोगों द्वारा किया जाना है जो भारत माता के पुत्र–पुत्रियाँ हैं। उन्होंने कहा कि स्वच्छ भारत अभियान को एक जन आंदोलन में बदल देना चाहिए और लोगों को ठान लेना चाहिए कि वे न तो गंदगी करेंगें और न ही करने देंगें। महात्मा गांधी ने एक "स्वच्छ भारत" का सपना देखा था। वे चाहते थे कि भारत के सभी नागरिक मिलकर इस देश को स्वच्छ बनाने का कार्य करें। बापू का मानना था कि साफ–सफाई ईश्वर भक्ति के समान है।

महात्मा गांधी के जन्मदिन पर स्वच्छता अभियान शुरू होना उचित ही है। गांधीजी स्वच्छता के सबसे बड़े पैरोकार थे। उनका मानना था कि स्वच्छता के बिना स्वतंत्रता अधूरी है। स्वच्छता उनकी दिनचर्या का अहम हिस्सा थी। महात्मा गांधी रोजाना सुबह चार बजे उठकर अपने आश्रम की सफाई किया करते थे। वर्धा आश्रम में उन्होंने अपना शौचालय स्वयं बनाया था और वे इसे प्रतिदिन साफ करते थे। एक बार एक अंग्रेज ने महात्मा गांधी से पूछा," यदि आपको एक दिन के लिए भारत का वायसराय बना दिया जाए तो आप क्या करेंगें?" गांधीजी ने कहा,"राजभवन के पास जो गंदी बस्ती है मैं उसे साफ करूंगा"। अंग्रेज ने फिर पूछा, "मान लीजिए कि आपको एक और दिन उस पद पर रहने दिया जाए, तो आप क्या करेंगें।" गांधीजी ने कहा, "दूसरे दिन भी वही करूंगा। जब तक सभी लोग अपने हाथ में झाड़ू और बाल्टी नहीं लेंगें, तब तक आप अपने नगरों को साफ नहीं रख सकते"। एक स्कूल को देखने के बाद उन्होंने शिक्षकों से कहा,"आप अपने छात्रों को किताबी पढ़ाई के साथ–साथ साफ–सफाई का काम भी सिखा सकें, तो आपका विद्यालय आदर्श होगा"।

गांधीजी के पैतृक निवास में उका नाम की मेहतर साफ–सफाई का काम करती थी। यदि गांधीजी कभी उसे छू लेते, तो उनकी माँ पुतलीबाई उन्हें स्नान

कराने को मजबूर करतीं। यद्यपि गांधीजी एक आज्ञाकारी बालक थे, किंतु माँ की यह बात उन्हें उचित नहीं लगती थी। तब 12 वर्षीय गांधीजी माँ से पूँछते, "उका धूल और गंदगी साफ करके हमारी सेवा करती है, फिर उसे छूने से मैं अपवित्र कैस हो गया?" गांधीजी के इन प्रश्नों का माँ के पास कोई उत्तर नहीं होता।

दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद के खिलाफ संघर्ष के दौरान उन्हें अंग्रेजों की इस आलोचना का सामना करना पड़ा कि वहाँ पर बसे भारतीय गंदी बस्तियों में अपनी गलत आदतों के साथ रहा करते थे। स्वयं वहाँ का सभ्रांत भारतीय वर्ग उन्हें छुआ–छूत और भेद–भाव की नजर से देखता था। गांधीजी ने इन आलोचनाओं को दुःखद किंतु सत्य पाया। उन्होंने स्वयं देखा कि भारतीय मजदूर वर्ग अपने घरों एवं आस–पास की जगहों को अस्वच्छ रखते थे। जब जोहानिसबर्ग में प्लेग की महामारी फैली, गांधीजी अपने अनुयायियों के साथ स्वयं की जान जोखिम में डाल कर मरीजों की देख–भाल करते रहे। प्लेग का कारण भारतीयों एवं नगरपालिका द्वारा द्वारा साफ–सफाई की अनदेखी करना था। गांधीजी के लिए मानवता की सेवा ईश्वर की सेवा के समान थी।

सन् 1915 में, भारत लौटने के पश्चात गांधीजी ने रविन्द्रनाथ टैगोर के आश्रम शांतिनिकेतन का दौरा किया। रविन्द्रनाथ टैगोर ने अपने एक साक्षात्कार में इस दौरे का जिक्र करते हुए कहा कि, "मैं जो काम कई वर्षों में नहीं कर पाया, गांधीजी ने कुछ दिनों में कर दिखाया। मेरा हमेशा से यह मानना था कि शांतिनिकेतन के छात्रों को अपने कमरे स्वयं साफ करने चाहिए, अपने बिस्तर स्वयं लगाने चाहिए, भोजन स्वयं बनाना चाहिए एवं बर्तन भी स्वयं साफ करना चाहिए। लेकिन मेरे छात्र ऐसे संपन्न परिवारों से आते थे कि मैं उनसे यह काम नहीं करा सका। उसका कारण यह था कि मैं उन कार्यों को स्वयं नहीं करता था। इसलिए जब मैं छात्रों को इस बारे में व्याख्यान देता तो वे मुझे गंभीरता से नहीं लेते, सिर्फ सुन भर लेते थे। किंतु गांधीजी ने विद्यालय में प्रवेश करते ही छात्रों का हृदय जीत लिया। वह उनसे घुल–मिल गए। उनका कहना था कि छात्र जो काम स्वयं कर सकते हैं, उसे नौकरों से करवाना अनुचित है और वे स्वयं अपने कमरे की सफाई करते, अपना बिस्तर लगाते, अपने बर्तन और कपड़े भी स्वयं ही धोते। इस बात का छात्रों पर गहरा प्रभाव पड़ा। उन्होंने शर्मिंदगी महसूस की और उन्होंने उसी समय सारे काम स्वयं करने की ठानी। तत्पश्चात, बापू ने विद्यालय के सफाई कर्मचारियों को भी कुछ दिनों की छुट्टी दे दी। परिसर में मल–मूत्र की दुर्गंध से सभी का जीवन दुष्कर हो रहा था। गांधीजी ने अपने हाथों में झाड़ू और बाल्टी ली और लग गए सफाई करने। इसका असर काफी संक्रामक हुआ और सारे छात्रों में सफाई की होड़ लग गयी। इस घटना से मैं स्तब्ध रह गया। मेरा हृदय इस महान आत्मा के प्रति श्रद्धा और सम्मान से भर गया। मुझे इस बात की खुशी है कि सारा भारत उन्हें महात्मा (महान आत्मा) के नाम से पुकारता है। सारे विश्व में यदि कोई इस संबोधन के काबिल है, तो वे हैं"।

इस महापुरुष का 150 वाँ जयंती वर्ष 2019 में है। आशा की जानी चाहिए इस वर्ष देश को स्वच्छ बनाने हेतु हम कोई कसर नहीं छोड़ेंगें। इस लक्ष्य की प्राप्ति के लिए बड़े बजट की जरूरत नहीं है। हम बस अपनी सामान्य आदतों में थोड़ा सुधार कर लें, तो हर जगह साफ–सफाई दिखाई देगी। हमें कहीं भी थूकना नहीं चाहिए, कचरे का गीले–सूखे में वर्गीकरण करना चाहिए, निर्धारित स्थान पर ही कचरा फेंकना चाहिए, नालियों को श्रम–दान करके साफ रखना चाहिए। फिलहाल तो हाल यह है कि सरकारी कार्यालयों में बाबू अपनी मेज और फाइलों पर पड़ी धूल भी साफ नहीं करते। राजनेता स्वच्छता कार्यक्रम को सिर्फ फोटो खिंचाने तक सीमित रखते हैं। दिल्ली जैसे महानगरों को लोगों ने मानो खुला शौचालय बना दिया है। जब कोई सैलानी दिल्ली में प्रवेश करता है, तो उसका परिचय सबसे पहले शहर की दुर्गंध से होता है। कहने को तो गंदगी फैलाने पर जुर्माने एवं सजा का प्रावधान है, लेकिन ऐसा होता नहीं है। जब तक देश का प्रत्येक नागरिक सफाई में सहयोग नहीं देगा, 'स्वच्छ भारत' संभव नहीं है। जन–जन की भागीदारी इस अभियान को सफल बनाने हेतु जरूरी है।

सुखी जीवन जीने की कला

रंजु महाजन

जैसा कि उपरोक्त विषय से ही पता चलता है कि सुखी जीवन बिताने के लिए हमें क्या–क्या करना चाहिए, क्योंकि यह जीवन परमपिता द्वारा प्रदत्त एक अमूल्य निधि एवं भेंट है। यह मानव चोला 84 लाख योनियां भुगतने के बाद ही मिलता है। इस चोले को पाने के लिए मनुष्य तो क्या देवता भी तरसते हैं, क्योंकि जब स्वर्ग में पुण्य कर्मों का फल समाप्त हो जाता है, तो मनुष्य को धरती पर अगले पुण्य कर्म करने के लिए भेजा जाता है।

अब प्रश्न यह उठता है कि इसे व्यतीत करने के लिए हमें क्या करना चाहिए? इसे हमें बहुत ही ध्यान से सोचना चाहिए और इस अमूल्य भेंट को बहुत ही सावधानीपूर्वक व्यतीत करना चाहिए। हमें अपने जीवन को ज्ञान, शक्तियों और गुणों रुपी धन से सजाकर अपने जीवन को धनवान बनाना चाहिए। यह अमूल्य धन भी कई प्रकार के होते है, जैसे समय रूपी धन, सदगुण रूपी धन, आध्यात्मिक शक्ति रूपी धन, स्वास्थ्य रूपी धन, सम्बंध रूपी धन और सबसे अन्त में है सत्संग रूपी धन। इन सभी गुणों से हम अपने जीवन को स्वर्णाभूषणों की जगह गुणों रूपी आभूषण सजा सकते हैं। मगर स्थूल रूपी धन अर्थात माया रूपी धन भी अधिकता मनुष्य को अहंकारी बना सकती है। इसलिए इस धन से हम जितना दूर भागेंगे, उतना ही सुखी रहेंगे जैसे कि कहा भी गया है "माया महा ठगिनी हम जानी"।

परंतु ज्ञान, गुणों और शक्तियों जैसे कई धन मनुष्य को अधिकाधिक नम्र और मिलनसार बना देते है। आइए अब हम इन गुणों के विषय में चर्चा करते हैः–

समय रूपी धन– यह वो धन है जो चाहने पर और मनुष्य के भरसक प्रयत्न करने के बावजूद भी वापिस लौट कर नहीं आता। समय के सदुपयोग करने में ही बेहतरी है क्योंकि बाद में पछताना पड़ता है। सृष्टि का भी यही सिद्धांत है कि समय भी उन्हीं का साथ देता है जो अपनी कद्र करते हैं। जिस प्रकार किसान समय पर बीज न बोए, तो फसल अच्छी नहीं होती। प्रत्येक काम को समय पर करने में ही हमारी बेहतरी है। संतों ने भी कहा हैः अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।

सदगुण रुपी धन– यह वो धन है जिस में साहस, आत्म–विश्वास, मर्यादा, शालीनता, विनम्रता, कर्मणता, सरलता, मिठास और परोपकार इत्यादि गुण रुपी धन मनुष्य को सफलता के शिखर पर बैठाते हैं। साहस के बिना कोई भी व्यक्ति योद्धा नहीं बन सकता। आत्मविश्वास के बिना जीवन की चुनौती स्वीकार नहीं की जा सकती। मर्यादा के बिना क्या विश्वासपात्र बना जा सकता है? शालीनता के बिना स्नेह और विनम्रता के बिना सम्मान मिल सकता है क्या? मिठास बिना प्रेम और परोपकार बिना दुआएँ और आशीर्वाद मिल सकते है क्या? ईमानदारी, नियमितता, अनुशासन, सहनशीलता, सभ्यता और गंभीरता कितने ही गुण हैं, जिनके बिना जीवन की उच्चता असंभव है, जिनके रहते

मानव कभी अभावग्रस्त नहीं हो सकता।

आध्यात्मिक शक्तियों रूपी धन – सदगुण एवं शक्तियां एक दूसरे की पूरक होती है। गुणों के बिना शक्ति और शक्ति के अभाव में गुणों को व्यवहार में नहीं लाया जा सकता। कहा जाता है कि भगवान ने मनुष्य को भौतिक रूप में सब कुछ दिया। मगर एक आध्यात्मिक शान्ति ही नहीं दी। यह शान्ति ही उसी व्यक्ति को मिलेगी जो अपने जीवन में प्रभु नाम का सुमिरन करेगा। इसलिए हमें आध्यात्मिक शक्ति का

विकास करना चाहिए। यह तभी संभव है जब हम अपने जीवन में शान्ति, एकाग्रता, स्वनियंत्रण, पवित्रता, निर्णय करने एवं नेतृत्व करने की शक्ति को महत्व देंगे। ईश्वर का सतत चिंतन एवं ईश्वर की तन्मयतामयी याद इन शक्तियों को जागृत कर देती है। जीवन की कठिन परीक्षाओं में धन–सम्पति जहां कुछ भी काम नहीं कर पाती, वहां आध्यात्मिक शक्तियों से प्राप्त मनोबल एवं दृढ इच्छा शक्ति ही काम आती है। इन्हीं शक्तियों के आधार पर ही कोई साधारण मानव से महा–मानव बन जाता है।

दुआ रूपी धन– मनुष्य को हर समय प्रत्येक व्यक्ति को दुआएं देनी चाहिए। अक्सर दुआओं का असर दवाईयों से भी बढकर होता है। जब भी कोई व्यक्ति ज्यादा बीमार हो जाता है तो डाक्टर भी यही कहते हैं कि बस इनके लम्बे जीवन के लिए दुआ ही करो। इनका प्रभाव और चमत्कार अलग ही रूपों में दिखायी देता है। अचानक ही कोई व्यक्ति व साधन ऐसे सहयोगी बन जाते हैं, जिनकी हमें आशा भी नहीं होती। वे दुआएं असरदार होती हैं जो सच्चे दिल से निकलती हैं। परोपकार की भावना से किए गए कर्मों के बदले दिल से आशीर्वाद मिलते हैं। निष्काम रुप से दी गई दुआओं का असर व्यक्ति विशेष पर बहुत ज्यादा असर होता है।

श्रेष्ठ कर्म रूपी धन– यह धन विशेष महत्व रखता है। इस धन के लाभ स्वर्ग और नरक दोनों स्थानों पर मिलता है। पुण्य का खजाना, भाग्य व समय रूपी बैंक में जमा उस फिक्स डिपॉजिट की तरह है, जिसकी किश्त समय पूरा होने पर स्वतः ब्याज सहित मिलती है। यह वर्तमान में कमाया हुआ धन नहीं, बल्कि पूर्व संचित धन होता है। जैसे अच्छे कुल में जन्म लेना, अच्छा माहौल मिलना, अच्छे सम्बंधी मिलना, अच्छा स्वास्थ्य मिलना– ये सब पुण्य फलीभूत होने के परिणाम है। ऐसे सौभाग्य को अच्छे कर्मों से बढाना चाहिए। श्रेष्ठ कर्म ही हमारे जीवन की सबसे बड़ी दौलत है।

प्रतिभा या हुनर रुपी धन– हमें अपनी प्रतिभा को बढ़ाने का भरसक एवं सतत प्रयत्न करने चाहिए। प्रतिभाशाली व्यक्ति के पास भले ही कुछ भी न हो पर प्रतिभा उसे बहुत कुछ बना देती है। यही प्रतिभा व्यक्ति को धरती से आकाश पर बिठाने में अहंम रोल निभाती है। जैसे लता मंगेशकर, बीरबल, मुंशी प्रेम चंद, चाणक्य और सचिन तेंदुलकर आदि व्यक्ति अपन–अपने क्षेत्र के प्रतिभाशाली व्यक्तित्व के धनी हैं। अपनी कला से वे सबके दिलों को जीत लेने की क्षमता रखते हैं। यह कला रुपी धन सम्मान, स्नेह, लोकप्रियता के साथ–साथ स्थूल धन की भी अपार प्राप्ति करता है।

स्वास्थ्य रूपी धन– यह धन सभी धनों में से उत्तम है और इसको संभाल कर रखने की आवश्यकता है। यह परमपिता परमात्मा द्वारा दिये गए रत्नों में से एक है। लाखों करोड़ों रुपए खर्च करके भी स्वास्थ्य रुपी धन फिर से नहीं पाया जा सकता। परमात्मा की इस दुर्लभ अनमोल देन को संभालना और इसकी कद्र करना

मनुष्य की जिम्मेदारी है। मगर आजकल जीवन की निष्क्रिय जीवन शैली, भोग–विलास, आलस्य, अधिक खान–पान और तृष्णाओं में डूबने के कारण हमारे शरीर का संतुलन बिगड़ जाता है और दैहिक जर्जरताओं के कष्ट सहने पड़ते हैं। हमें अपनी जीवन–शैली को बदलना होगा और बाद में इस अमूल्य भेंट को परमात्मा को वापिस लौटाना होगा।

संबंधों रूपी धन– मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। उसे संसार में रह कर हर किसी के साथ संबंध जोड़कर ही रखने चाहिए। इसी में ही रिश्तों की चाहत और उनकों बरकरार रखने में ही उसकी बेहतरी है। किसी दार्शनिक ने भी ठीक ही कहा है कि मनुष्य अपने जीवन का 80 से 85 प्रतिशत सुख सम्बंधों के सानिध्य में प्राप्त करता है। अकेलापन मनुष्य को अंदर से ही काटता है। जिस तरह दीमक लकड़ी को अंदर ही अंदर से काटती है, उसी प्रकार मनुष्य जीवन अकेले बिताना बहुत ही मुश्किल है। जरा सोचिए– क्या कोई भोजन बनाने वाली, सफाई करने वाली नौकरानी–मां, बहन या पत्नी का स्थान ले सकती है या दाम चुकाकर मिली सेवाओं से क्या किसी का अनमोल सम्बंध बन सकता है। यदि नहीं– तो हमें घर, परिवार और समाज में परस्पर प्रेम, दया, इज्जत, सहानुभुति और सौहार्द्र की जोत जलानी चाहिए और अपने जीवन को कृतार्थ करना चाहिए।

सत्संग रूपी धन– यह धन तो बहुत ही महत्वपूर्ण धन है। उपरोक्त धनों में से यह सबसे महत्वपूर्ण स्थान रखता है। सत्संग वास्तव में क्या है? सत्य का संग ही सत्संग है। कहा जाता है कि सत्यं शिवं सुंदरम। सत्य ही शिव है, शिव ही सुंदर है। जब हम आत्माएं अजर, अमर और अविनाशी परमात्मा का संग करती हैं तो उसे ही सत्संग कहा जाता है।

कैसी विडम्बना है, जिस परमपिता परमात्मा ने हमें इतना सुंदर जीवन दिया, माता पिता, रिश्तेदार, धन–सम्पति आदि दिए, उसे याद करना हमें जरुरी नहीं लगता या उसे याद करने की कोई उम्र निश्चित है। मगर भगवान यह तो जरुर चाहता होगा की मैंने इसे अमूल्य शरीर तो दिया है, ताकि वह संसार में जाकर मेरा नाम सुमिरन करे और सांसारिक माता–पिता के साथ रहकर इसकी जिंदगी में मेरे लिए विशेष स्थान और सम्मान रहे। परमात्मा शक्तियों के सागर हैं, उन्हें याद करने से हमारे अंदर सहन करने की शक्ति आती है। हमें अपने दिन की शुरुआत परमपिता परमात्मा की याद से करनी चाहिए। भगवान हमारे सबसे अच्छे दोस्त, सखा और अभिभावक हैं। जब सभी शक्तियां फेल हो जाती हैं तब वही परम सत्ता, परम पिता परमात्मा और परम शक्ति हमारे जीवन की हर मुश्किल को आसान कर देती है। परमात्मा हमारा साथी और सहयोगी बनकर हमारे साथ चलने को तैयार है, बस हमें कदम आगे बढाना है, फिर परमात्मा का रंग हम पर चढेगा और हम पूर्ण रुप से उसके हो जायेंगे। कहा भी जाता है कि

वक्त है अब भी जाग,
हरि भजन कर
नाम धन से ही,
अपने तू भण्डार भर
नाम ही सच्चा साथी,
जो साथ जाए

हमें चलते फिरते, उठते बैठते भगवान का सुमिरन करना चाहिए। कहते भी हैं कि "अन्न के कण को परमात्मा के क्षण को कभी व्यर्थ नहीं गंवाना चाहिए"। सत्संग ही हमारे जीवन को पुण्य कर्मों से सजाता है। परमात्मा की याद में बिताया हुआ कोई भी क्षण व्यर्थ नहीं जाता। जब भी वक्त मिले सकारात्मक ऊर्जा लेने के लिए हमें सत्संग में जाकर अपना जीवन सुधारना चाहिए।

"एक घड़ी आधी घड़ी, आधी में पुनि आध।
तुलसी संगत सत्संग की, हरे कोटि अपराध।"

उपरोक्त विश्लेषणों का उद्देश्य यही है कि हमें अपने जीवन मे सभी प्रकार के गुणों का समावेश करना चाहिए और परमात्मा से सर्व संबंध जोड़ कर सभी प्रकार से मालामाल हो जाना चाहिए। मनुष्य आत्मा यदि हीरा है तो सदगुण उसकी चमक है। इसके बिना हीरे की कीमत कभी उच्च नहीं हो सकती।

सदगुणों का विकास हमारे व्यक्तित्व और अच्छे जीवन की पहचान है। हमें सर्व–गुण सम्पन्न होने का भरसक प्रयत्न करना चाहिए, तभी हम उस परम तत्व मे विलीन होंगे और स्वर्ग में स्थान रखने कि क्षमता प्राप्त कर सकते हैं।

कार्यालयीन गतिविधियां

दीप प्रज्जवलन समारोह में हिन्दी पखवाड़े का शुभारंभ करते हुए
श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान हिन्दी निबंध प्रतियोगिता में भाग लेते
कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारीगण।

कार्यालयीन गतिविधियां

हिन्दी पखवाड़े के समापन समारोह के दौरान प्रतिभागी को पुरस्कृत करते हुए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार महोदय।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान वर्ष पर्यन्त हिन्दी में सर्वाधिक कार्य करने वाले अनुभाग को पुरस्कृत करते हुए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार महोदय।

कार्यालयीन गतिविधियां

'अंकुर' पत्रिका के 108–109वें अंक का विमोचन करते हुए
श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार महोदय।

हिन्दी पखवाड़े के दौरान पत्रिका के बाल रचनाकार को पुरस्कृत
करते हुए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार महोदय।

कार्यालयीन गतिविधियां

स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सामूहिक गीत प्रस्तुत करते हुए कार्यालय के अधिकारी/कर्मचारीगण।

कार्यालय द्वारा आयोजित उत्तर क्षेत्रीय बैडमिन्टन (आई.ए. एण्ड ए.डी.) 2018–19 प्रतियोगिता की विजेता टीम को पुरस्कृत करते हुए मुख्य अतिथि श्री संदीप लाल, प्रधान निदेशक लेखा परीक्षा (केन्द्रीय) तथा फ़ैसल इमाम, महालेखाकार।

कविता

बहुत दिन हो गए

रिंकू कश्यप

जिंदगी तुझे करीब से देखे,
बहुत दिन हो गए।
पक्की छतों के साये में,
अब तो रिश्ते भी कच्चे हो गए।

जिस मिट्टी में पले–बढ़े थे,
अब वो खेत हैं कहाँ।
शहरीकरण की आंधी में,
बापू के खलिहान भी खो गए।

जिंदगी तुझे करीब से देखे
बहुत दिन हो गए।

मां के हाथ की प्यार भरी रोटी,
अब नसीब में है कहां।
शहरी भाग–दौड़ भरी जिंदगी में,
हम जाने कहाँ खो गए।

जिंदगी तुझे करीब से देखे
बहुत दिन हो गए।

नीम की ठंडी छाँव अब,
दूर–दूर तक मिलती नहीं।

घर–घर में कूलर ए.सी.का डेरा,
फिर भी जिंदगी में चैन नहीं।
चंद रूपयों के लालच में हम भी,
माँ की ममता से दूर हो गए।

झूठा सच

सुनील कुमार गुप्ता

सुबह से लेकर शाम तलक सब झूठा झूठा
धरती दिखती चपटी सबको यह भी झूठा
सूरज का उगना और छुपना भी है झूठा
आसमान का रंग है नीला यह भी है झूठा

आसमान जो हमको दिखता वो भी झूठा
सच तो यह है जो दिखता है वो न होता
जो सच होता है वो हमको क्यों न दिखता
धरती का आकार गोल है हमें न दिखता

पूरब से पश्चिम में जाता सूरज हमें न दिखता
घूम रही धरती धूरी पर हमें न दिखता
सूरज अपनी जगह वही है हमें न लगता
हमको लगता आसमान से बरसा पानी

पर धरती पर गिरता है धरती का पानी
सच की वह दिखाने वाला शंकित लगता
साधू भेष में छुपा हुआ शैतान न दिखता
मुँह में राम बगल में छुरी ले जो फिरता

नहीं हमें पहचान हमें वो सज्जन लगता
जो अपना होता वो धोखा दे जाता है
जो न होता अपना अक्सर साथ है देता
टेढ़े रास्तों पर चलने की ठान ली हमने

सीधा सादा काम हमें क्यों मुश्किल लगता
कहते हैं हम हिंदू मुस्लिम सिक्ख ईसाई
मिल कर रहते है आपस में भाई–भाई
फिर इतनी नफरत क्यों है संसार पे छाई

सच तो यह है हमने अपने स्वार्थ की खातिर
इंसान को मजहब जाति के नाम पे बांटा
ऊंच–नीच का सब तमाशा है झूठा
इंसान को इंसान में क्यों इंसान न दिखता

♦——•●◆●•——♦

जितना और जैसा ज्ञान विद्यार्थियों को उनकी जन्मभाषा में शिक्षा देने से अल्पकाल में हो सकता है उतना और वैसा पराई भाषा में सुदीर्घ काल में भी होना संभव नहीं है।
– घनश्याम सिंह

सरहदें

महेन्द्र सिंह

सरहदों की कहानियाँ सुनते आए हैं,
सदियों से, बड़ी उत्सुकता से, भिन्न–भिन रूपों में
जय–पराजय से गौर्वान्वित–अपमानित महसूस करते हुए।
वही कहानियां सुनकर सैनिक के हौंसले होते हैं बुलंद,
मर–मिटने को रहते हैं तैयार,
नवाजा जाता है इसे देशभक्ति के जज्बे से
मर जाने पर कहलाते हैं शहीद,
शहादत पर गर्व करता है पूरा देश
हर तरफ होता है राजनीति का संदेश
पैसे से लगाया जाता है मरहम
टी.वी. पर होती है चर्चाएँ गर्मागरम,
नेताओं के गौरवशाली बयान
कर देते हैं मौत को भी सार्थक
बूढ़े मां–बाप भी हो जाते हैं विवश
गर्व करने को,
अपने कलेजे का टुकड़ा खोने पर।

छोट–छोटे बच्चे हो जाते हैं अनाथ,
उनके मन के भाव को नहीं पढ़ता है कोई।
पुलवामा की घटना पर थी हर चैनल पर खबर,
मीडियाकर्मियों व नेताओं के वक्तव्यों में,
केवल सरहद व शहीदों का ही जिक्र।
रोते बिलकते बच्चों की सिसकियों की,
मानों किसी को न थी फिक्र।
यह देखकर सोचने लगा
सरहदों के रूप अवश्य बदले हैं,
परंतु आज भी सरहदों पर होता हैं
मौत का तांडव,
जो होता था अतीत के राजा–महाराजाओं के समय,
जैसे ही टी.वी. सक्रीन से नजर हटाई,
मैं स्तब्ध रह गया, आँखें फाड़कर देखने लगा,
जब पास बैठे बच्चे ने पूछा
पापा ये सरहदें क्यों होती हैं?

अच्छाई का चलन मानो...

विनय कुमार गर्ग

अच्छाई का चलन मानो थम सा गया है,
हर इंसा मतलबपरस्ती में जैसे रम सा गया है।
अच्छे कर्म, और भलाई मानो दुर्गुण बन गए है,
बेशर्मी, बे–मुरव्वत और संगदिली जैसे शगुन बन गए हैं।
शैतानियों का तेरी, इक दिन हिसाब होगा,
इन्साफ अपना कर ले, रहनुमा किसी का बन के।
रंगो–धर्म की फितरत, हमें दूर ले गई है,
है मालिक वही सभी का, हैं सब उसी के बंदे।

दुर्घटनाओं में अक्सर घायल हो जाते है लोग, कभी रोते–कभी कराहतें हैं लोग,
देखा है हमने कैसे, राहगीरों को रूकते व चलचित्र बनाते, फिर यूँ ही पीछे हट जाते हैं लोग।
क्या तेरा है, और है भी तो कब तक महज यूँ ही दम्भ भरने से क्या होगा,
गर दे दो इंसानियत को दिल में जगह थोड़ी नाम तेरा भी इंसानों में शुमार होगा।

ये मेरा है, बस मेरा है, पर असलियत में है सब कुछ, इसी जहाँ का,
फिर क्यूँ पीछे हटें हम, झिझकें हम, देख कर के दर्द किसी का।
मदद कर देना, भला कर देना यह तो बड़े दिल की पहचान है,
मगर तंगदिली में यारों, बड़े दिल वाला भी जैसे गुम–सा गया है।
फूल देते हैं जब हम किसी को, अपना हाथ भी महक जाता है,
मदद कर पाएं जब किसी की तो मन को संतोष व आत्मा को सुकून आ जाता है।

है मिल्कियत उसी की, जिसने दिया है मौका,
बस नाम अपना कर ले, करके भला किसी का।
दीवानगी जिस पर छाई, भला करने की धुन समाई,
वो खुशकिस्मत सभी में, दुख की छाया ना पास आई।
यह रीत नहीं भारत की, मतलब परस्त हो जीना,
उस परहित की भावना का कहाँ लोप–सा हो गया है।
अच्छाई का चलन मानो थम सा गया है.....

मेरी कविता

अनूप डांगरा

सुन ए कविता मैं क्या कहता हूं
बस तुझे ही मैं सोचता रहता हूं
लय तेरी और मेरी मानों एक सी है
मेरे मन की सब बातें तुझमें लिखी हैं
सुन ए कविता मैं क्या कहता हूं

ये जो तू लहराती सी चलती है
ये चाल तेरी मेरे मन को ठगती है
टूटे–फूटे चंद अक्षरों से तू
बड़े सुरों के महल बनाती,
तोड़ती और जोड़ती फिर नए रूप में तू
मेरे मन के तू बोल चुराती

धड़कनों की भाषा तुझे खूब आती है
और कलम की स्याही तुझे खूब भाती है
कोरा कागज तेरे लिए मानों स्वर्ग सा है
और लिखने वाला वो मतवाला अर्ध सा है

इस दुनियां में तू
और तुझमें ये दुनिया
जाने कौन किसमें समाया
धन्य हूं मैं, जो तुझको पाया
मेरे लिए तो तू एक वरदान है
ए मां सरस्वती, तुझको मेरा प्रणाम

♦——•●◆●•——♦

राष्ट्रीयता का भाषा और साहित्य के साथ बहुत ही घनिष्ट और गहरा संबंध है।

डॉ. राजेन्द्र प्रसाद

1
आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
ग्रन्थावली
ओमप्रकाश सिंह

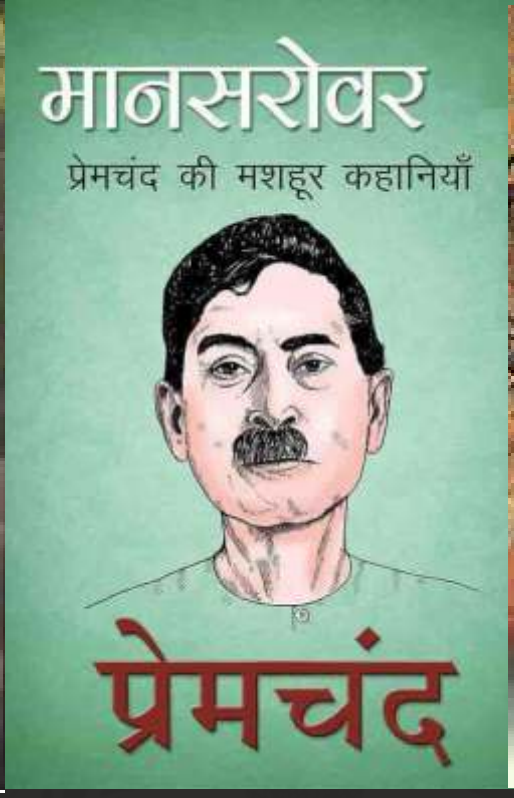
मानसरोवर
प्रेमचंद की मशहूर कहानियाँ
प्रेमचंद

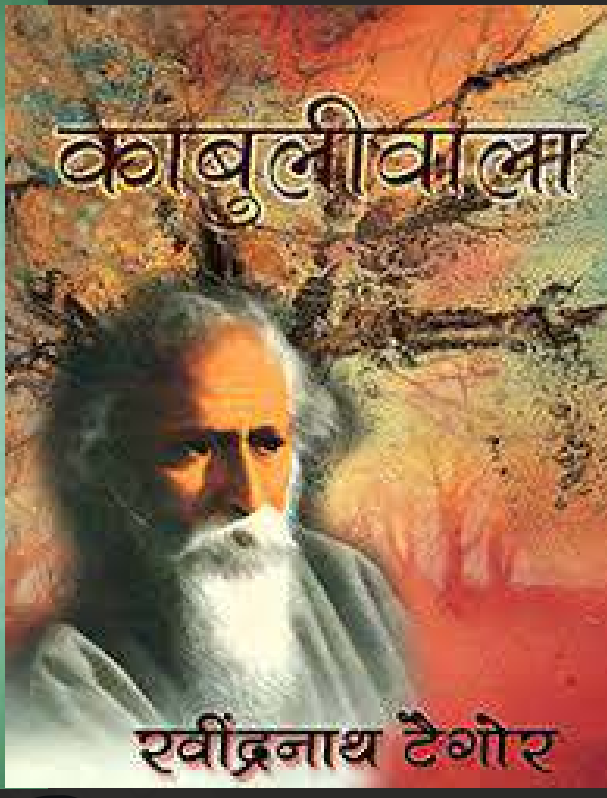
गल्पगुच्छ
रवींद्रनाथ टैगोर

कहानी

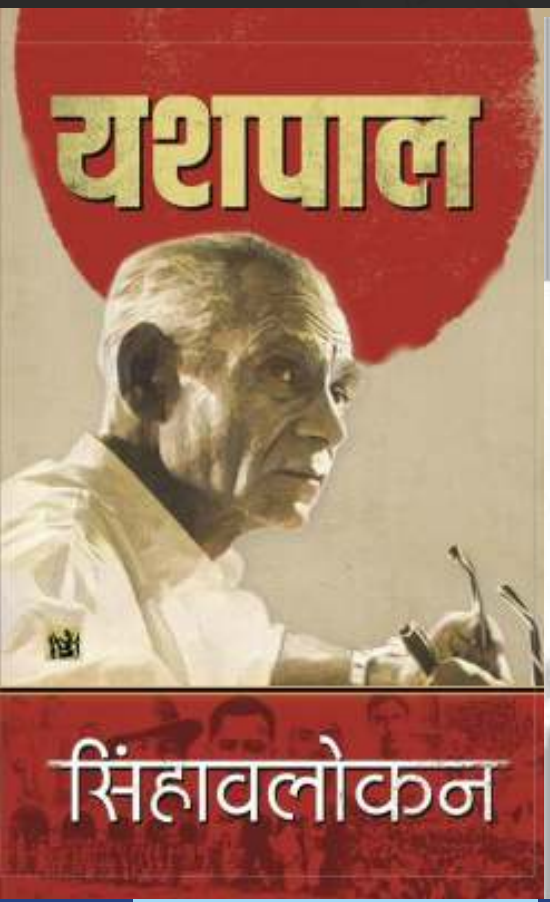
यशपाल
सिंहावलोकन

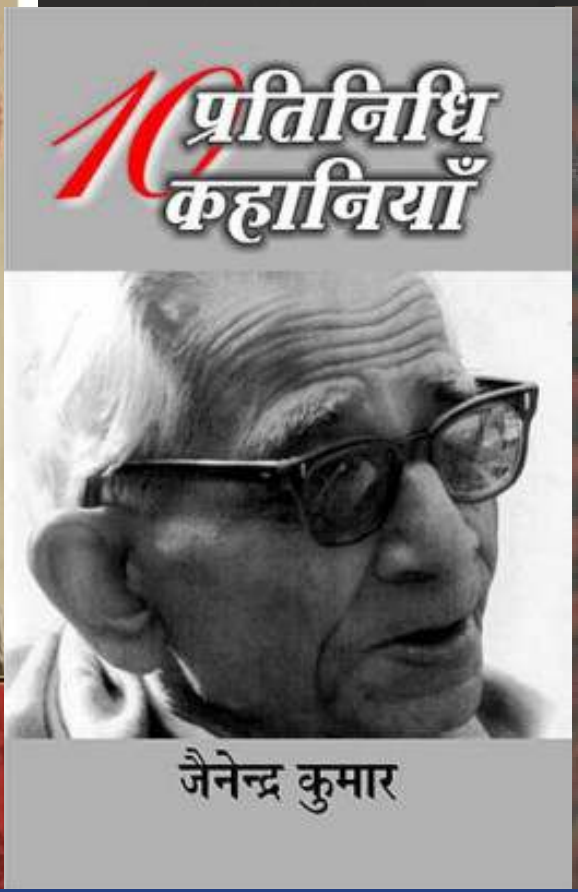
10 प्रतिनिधि कहानियाँ
जैनेन्द्र कुमार

आकाश-दीप
जयशंकर प्रसाद

लापता

जसविंदर शर्मा

जी हां, आपने सही पहचाना। वह मेरे पापा ही हैं– त्रिलोकी नाथ चौहान, हैं न भारी भरकम नाम। बहुत कड़क आदमी हैं जनाब। अपने समय के कलंदर।

एक वाक्य बोलकर सबको चुप करवा देते थे– डोंट ट्राई टू बी ओवरस्मार्ट। मैं तो क्या हर आदमी जो उनसे वाबस्ता था, उनसे प्रभावित हुए बिना नहीं रह पाता था। एन्साइक्लोपीडिया तो फिर छोटा शब्द है उनके सामने। कोई कहता कि वह अपने आप में एक बहुत बड़ी संस्था थे।

हर चीज में उनका दखल काबिले गौर था– संगीत, कविता, धर्म, विज्ञान, इतिहास या राजनीति। आप बात करके देखते उस समय।

बहुत बेदाग चरित्र के मालिक थे वह। साफ सुथरी छवि के मालिक। कभी कोई अनगर्ल बात नहीं करते थे। जो बात आज उन्होने कही दस साल बाद भी वही हू ब हू। हजारों लोगों के नाम मानो तोते की तरह रटे हुए थे।

अब कहां हैं? जी हां, जिंदा हैं अभी।

जिंदा भी ऐसे मानो मांस का लोथड़ा हो। दिन में पता नहीं कितनी बार हिंसक हो उठते हैं। घर के एक

उनके सामने बहुत छोटा महसूस करते थे हम। उनका हर वाक्य एक कमांड होता था और हरेक शब्द एक संदेश। कभी अपनी पीठ नहीं लगने दी उन्होने।

उनका सबसे बड़ा प्लस प्वाईंट यह था कि

कमरे में कैद करके रखना पड़ता है उन्हें। ताला लगाकर।

डिमेंसिया नाम का रोग सुना होगा आपने। इसमें स्मरण शक्ति खत्म हो जाती है। रोजाना की आम

गतिविधियां नहीं कर सकता वह आदमी। बातचीत में ठहराव नहीं रहता, कोई फोकस नहीं। बच्चों से भी गया गुजरा हो जाता है। बच्चा तो फिर भी हर रोज एक नई बात सीखता है मगर पापा जैसा आदमी लगातार भूलता जाता है। आसपास, अपने आपको। अपने शरीर के अंगों से नियंत्रण घटता जाता है उनका।

कई रूप हैं इस बीमारी के। मैं तो ठीक से बता भी नहीं पाऊंगा। अल्जाइमर रोग है या कुछ और।

मगर जो भी हैं आदमी आलू गोभी की तरह हो जाता है। सामने है मगर उसका वजूद न के बराबर। अपने आप में गुम हो गया लगता है। खो गया लगता है।

लापता हो जैसे।

हम लोग पापा को कई अस्पतालों में ले गए। शुरू–शुरू में पापा का कुछ और ही रूप था। तब शुरूआत थी शायद।

डॉक्टर पूछता– क्या नाम है?

पापा चौकन्ने होकर जवाब देते– त्रिलोकी नाथ चौहान।

डॉक्टर सहम जाता है अरे, आप हैं सर। बहुत नाम सुना है आपका। आपको कौन नहीं जानता। आपने तो बहुत बड़े–बड़े काम किए हैं जो कोई दूसरा नहीं कर सकता।

पापा मुस्कराते, अजीब सी दंभभरी मुस्कराहट। चेहरे पर अहंकार भरे भाव आ जाते उनके।

शुरू के सालों में पापा अपनी यह बीमारी मिलने वालों पर जाहिर नहीं होने देते थे। घर में कोई भी आता उससे मिलकर खुश हो जाते। भले ही पहचानते नहीं थे मगर आने वाले के पास बैठते। बेशक कुछ न कुछ पूछते मगर ऐसा भी नहीं कि कोई रुचि न लेते हों। कहते– खाना खाया, कब आए हो।

दो चार बातों तक ही महदूद हो गया था उनका सारा अस्तित्व।

फिर धीर–धीरे अपने कमरे में ही रहने लगे।

सबसे बुरी बात तब हुई जब वह आईने में अपनी ही सूरत भूल जाते। खुद को कोई अन्य समझकर अपने अक्स से बात करने लगते।

फिर आसपास से बेखबर होने लगे। सुबह को शाम समझने लगे। दिन तारीख तो अब क्या याद रखनी थी उन्होने।कुछ बातों की जिद पकड़ लेते। कभी अपने घर की बाल्कनी में हम पापा को बिठाते तो कुछ देर बार वह अपने कमरे या बाथरूम का ठिकाना भूल जाते।

खाने को लेकर बहुत लोचा होने लगा। उन्हे कभी तो बहुत भूख लगती तो किसी दिन उन्हे चाय के साथ बिस्कुट खिलाना भी मुसीबत हो जाता हम लोगों के लिए।

कभी अपने स्वर्गीय पिता को याद करने लगते। कहते मुझे उनके पास छोड़ आओ। मम्मी समझाती– आप 90 के हैं तो आपके पिता तो कब के स्वर्ग सिधार गए होंगें।

हैरान होकर पूछते– अच्छा कब मरे? मुझे बताया क्यूं नहीं।

उनकी आँखों से आंसू छलकने लगते।

पापा की स्मरण शक्ति बहुत तेजी से घटती जा रही थी। अब मुझे पहचानते थे या मेरी मम्मी को। मम्मी उनसे 10 साल छोटी थी। सेहत तो उनकी भी अच्छी नहीं थी।

बहुत क्षुद्र जीव है यह आदमी। ज्यादा देर तक शासन नहीं चला सकता। दूसरों पर ठीक है। दूसरों को चालीस पचास बरस काबू कर लेगा मगर खुद अपने शरीर से नियंत्रण हट जाए तो बहुत मुसीबत आ जाती है। खुद के साथ समीकरण बिगड़ जाए तो साथ वालों की जिंदगी हराम हो जाती है।

आपका कहना आपकी जगह सही है। सब के साथ नहीं होता ऐसा।

इंग्लैंड की रानी नब्बे के आसपास है। खूब कर रही है राज। अजी क्या पावर है उसके पास। औपचारिक रूप से बस सोने की मुहर ही है। हां, बस इतनी सी पावर हो तो आदमी का दिमाग खराब नहीं होता।

पापा से मनोचिकित्सक उनके आसपास बैठे लोगों के बारे में पूछता– ये कौन है? पापा तिरस्कार के

भाव से कहते–ये मेरा नालायक बेटा है। कुछ नहीं हो सका इससे। नेशनल डिफेंस एकाडमी से भाग आया। अब अपना चौपट करके बैठा है।

मुझे बहुत अपेक्षाएं थी पापा की। खुद तो बहुत बड़े महत्वाकांक्षी थे ही? मुझे लेकर कुछ ज्यादा ही पोजेसिव थे। मुझे अपने से भी ऊपर देखना चाहते थे।

जब मैं आर्मी अफसर के प्रशिक्षण केन्द्र से भाग आया और इधर उधर हाथ–पांव मार रहा था तब पापा मुझे उलाहना देते। बार–बार कहते– मैं खाली हाथ आया था दिल्ली। बाप की पांच रुपये महीने पेंशन थी। खाने वाले दस जीव थे। अब तुम्हारे लिए चण्डीगढ़ में दो कनाल की कोठी बनवाई है मैंने। दस एकड़ का फार्म हाउस है। घर में चार कारें खड़ी हैं। साले, तुमने क्या किया? मेरे नाम को बट्टा लगा दिया।

मेरी हर चीज से शिकायत थी पापा को। मैं उनकी किसी अपेक्षा पर खरा नहीं उतरा।

मैं क्या बनना चाहता था? अरे साहब जब से होश सम्भाला है मुझसे किसी ने पूछा नहीं। बस हुक्म दे दिया जाता कि ये कर लो, वो कर लो।

पूरे इलाके में पापा का इतना ज्यादा रौब था, रसूख था। एक से एक बढ़िया स्कूल में मुझे दाखिला मिल जाता। कालेज में आराम से एडमिशन मिल जाता। टीचर मुझसे खौफ खाते कि कहीं मेरे पापा उनके खिलाफ किसी को टेलिफोन न कर दे।

एक वक्त था शहर की बहुत बड़ी ताकत का पर्याय थे वह, बहुत बड़ी हस्ती थे पापा। सब कुछ भगवान की देन थी। इतने ज्यादा पढ़ते नहीं थे। बस दिमाग बहुत बड़ा था। पता नहीं सब कुछ कैसे समा जाता था। सुबह अखबार पढ़ते थे। याददाश्त बहुत गजब की थी। सामने वाले को तर्क देने लायक नहीं छोड़ते थे।

बहुत सारी महत्वपूर्ण घटनाएं थी उनके जीवन की। फौज में सीधे अफसर बनकर गए थे। आजादी के तुरंत बाद पुलिस के बड़े अफसर आर्मी से लिए गए। पापा की टॉप के लोगों में गिनती होने लगी। काम के माहिर थे और राजनीति से दूर। नेताओं ने खूब फायदा उठाया पापा का। पापा को अच्छे प्रभार मिलते। जहां जहां दंगा या अलगाववादी उपद्रव होते, पापा ने हीरो की तरह काम किया।

मैं क्या बताऊंगा। आप गूगल से पूछ लेना।

वह बताते–बताते थकेगा नहीं मगर आप सुनते–सुनते बोर हो जाएगें।

हम परिवार वाले बुरी तरह पक गए थे पापा की इस मशहूरी से।

उसका हमारी नार्मल लाइफ पर बहुत बुरा असर पड़ा।

मां की जुबान चली गई।

जी नहीं, गूंगी नहीं हुई। पापा के सामने बौनी होती गई। विरोध नहीं कर पाती थी। पापा ने जो कह दिया वह पत्थर की लकीर थी।

मैं खुद। कहां–कहां नहीं धकेला गया मुझे। और मैं था कि हर जगह नाकाम करार दे दिया जाता। क्योंकि मैं वह सब नहीं करना चाहता था।

क्या करना चाहता था?

अजी सोचने का मौका ही कब मिला मुझे। पापा ही हावी रहे मेरी सोच पर।

रिटायरमेंट भी बहुत लम्बी थी पापा की। 80 साल की उम्र तक तो वह बहुत ही सक्रिय रहे। कई तरह के असाइनमेंट मिलते रहे पापा को। विदेशों में भी जाते रहते। हर समय सूटकेस तैयार रहता।

बस एक ही बात बताई जाती हमें–दिल्ली जा रहे हैं।

हमारी सांस में सांस आती कि कुछ दिन आराम से कटेंगे।

समय बदला, लोग बदले, सरकारें बदली। पापा का स्थान दूसरे लागों ने ले लिया। पापा की उपयोगिता कम होती जा रही थी। अब ईमानदारी की कोई कीमत नहीं रह गई थी। पापा अनवांटिड हो गए। समय सापेक्ष नहीं रहे। बूढे भी हो गए।

जब पापा की उम्र 85 से 90 के बीच थी तब पापा रुतबे से घटते गए। चिड़चिड़े हो गए। मैं 60 का हो गया था।

क्या करता हूं?

छोटे–मोटे धंधे करता हूं। पापा ने इतना कुछ जमा कर लिया उसे सम्भालता हूं।

लोगों ने पापा से मिलना छोड़ दिया। पापा अपने कमरे में अकेले हो गए।

कभी कभार कुछ लिखते। वह दिखाऊंगा आपको। मेरे तो कुछ पल्ले नहीं पड़ा। देश की राजनीति पर कुछ निबंध वगैरा हैं।

जी हां, पापा का लिखा दिखाया था प्रकाशकों को। वे कहते हैं कि बिकेगा नहीं। अगर बीस साल पहले लिखा होता तो शायद कुछ करते।

इन्सान की यही लिमिटेशन है। समय पर खरीदा माल समय पर ही बेच देना चाहिए। बाद में कोई कीमत नहीं मिलती।

पापा को अब घर में बांधकर रखना भी अपने आप में फुलटाइम काम होता जा रहा था। किसी को कुछ नहीं समझते थे वह। किसी का कहना नहीं मानते थे। मम्मी को समझाते थे कि घर की नौकरानी है। मै अब उन से खुलकर झगड़ने लगा था। शायद तभी मेरे काबू में आ जाते थे। अब मेरा डर खत्म हो गया था। पापा अब ऐसे बूढ़े शेर थे जिसके दांत टूट चुके थे और गुर्राना भी वह भूल चुके थे।

अब एक नई मुसीबत का सामना करना पड़ रहा था हमें। पापा बिन बताए मौका पाते ही घर से निकल जाते।

एक बार नहीं बार–बार घर से निकल कर भागे वह। पहले तो यहीं अपने एरिया में ही गुम हो जाते। हम ढूंढ लाते या कोई जान पहचान वाला छोड़ जाता।

दादी बढ़ आई थी उनकी। शक्ल बदल गई थी। शहर बदल गया था। दुकानदारों को तो पापा की बीमारी के बारे में पता था मगर जान पहचान के पुराने लोग कम होते जा रहे थे। कुछ बच्चों के साथ चले गए। कुछ मर मरा गए।

ये सुसरा चण्डीगढ़ है न। यहां सारे सैक्टर एक समान लगते हैं। सेक्टर–35 की मार्केट और सेक्टर–36 की मार्कीट में फर्क करना मुश्किल हो जाता है। चौक, मकान, मोड़, सब एक जैसे दिखते हैं।

अब पापा को काबू में करना सच में मुश्किल हो गया था। जरा सा मौका मिलता, वह निकल भागते। दीवार फांद लेते।

सारी उम्र दिल्ली जाते रहते थे। अब भी हर वक्त एक ही रट लगाते, 'मुझे दिल्ली ले चलो। वहां मेरे पिताजी हैं। उनकी देखभाल कौन करता होगा।' मम्मी रोने लगती। पापा पर कोई असर नहीं होता था।

बाकी के सारे रिश्तेदार भूल गए थे उन्हे। सिर्फ मुझे नहीं भूले। हम उनके गले में या बाजू पर नाम, पता या मेरे मोबाइल का नंबर लिखा रिबन बांध देते मगर वह उसे उखाड़ कर फैंक देते। कमीज के कालर या बाजू के कफ के अंदर लिखा रहता पेन से। मगर किसी दूसरे को क्या पड़ी है। आजकल आदमी अपने आप से बेखबर रहने लगा है। किसी दूसरे की तरफ देखता तक नहीं। पुलिस? अरे साहब उनका अपना पेट नहीं भरता। वह आम नागरिक की मदद क्यूं करने लगी भला।

एक दिन वही हुआ जिसका हमें हर वक्त डर सताता रहता था। पापा लापता हो गए।

हर वक्त दिल्ली जाने की रट लगाते रहते थे। तो किसी ने दिल्ली की बस में बिठा दिया होगा।

अब दिल्ली तो एक समुंदर है। हम लोग यहां अपने शहर, अम्बाला, पटियाला में ढूंढते रहे। पुलिस स्टेशन, वृद्धाश्रम, बस स्टैंड, रेलवे स्टेशन, सराए सब जगह। दो आदमी रखे पैसे देकर। उन्हे हर रोज सब तरफ भेजते। लापता होने के पोस्टर भी लगवाए। अखबारों में कई दिन विज्ञापन दिया।

पापा सेक्टर 35 के स्टेट बैंक से अपनी पेंशन लेते थे। वहां पता किया। मम्मी के नाम पेंशन लगवाने की बात हुई तो वे बोले किसी जगह से मृत्यु का प्रमाण पत्र लाओ। या कुछ साल इंतजार करो। उसके बाद कचहरी से लापता होकर मरा हुआ जानकर ऐसा प्रमाण पत्र मिल जाएगा।

साल बीता कोई खबर नहीं मिली पापा की।

घर का बंदा गुम हो जाए तो कितना तकलीफदेह हो जाता है रहना–सहना। हर रोज एक आस जगती है। फिर इस उम्र का आदमी घर से चला जाए तो सोच कर देखिए जनाब।

हम चुप होकर बैठे थे। क्या कर सकते थे हम।

फिर एक दिन बैंक से ही मुझे फोन आया कि आपके पापा जिंदा हैं।

दिल्ली के सरकारी अस्पताल एम्स में भर्ती हैं।

आखिर दिल्ली जाकर ही दम लिया पापा ने।

वहां पता नहीं कहां–कहां भटकते रहे होंगे। बीमार हुए तो किसी ने लावारिस समझकर एम्स अस्पताल में भर्ती करवा दिया होगा। अंग्रेजी बोलते थे तो किसी ने सोचा कि अच्छे घर के होंगे। अपना नाम तक याद नहीं था पापा को।

कैसे पता चला।

डॉक्टर लोग हर रोज उनसे बातचीत करते होगें तो एक दिन अचानक पापा ने बोला– त्रिलोकी नाथ चौहान, स्टेट बैंक, सेक्टर–35 चण्डीगढ़।

वहां के लोगों ने यहां नम्बर मिलाया और बैंक वालों ने मुझे सूचित किया।

मैं पापा को लेने के लिए निकला। मन में गुस्सा भी था और अपराधबोध भी कि हम उनकी परवरिश ठीक से नहीं कर रहे हैं।

लावारिश की तरह जनरल वार्ड में पड़े मिले वह। गंदे से कपड़ों में बहुत शर्म आई। बहुत देर लगी यह बताने में कि मैं उनका बेटा हूँ। बिल्कुल पराये से लग रहे थे। आंखों में कोई भाव नहीं। कोई भी ले जाता उन्हे वहां से।

मुझे उनकी फीस भरने को कहा गया। मैं दो लाख रूपये नकद लेकर गया था। कांउटर पर बैठे आदमी ने बताया– एक हजार, दो सौ साठ रुपये। मेरा यकीन करना साहब।

बहुत पत्थर दिल इन्सान हूँ मैं मगर पहली बार फूट–फूट कर मेरे आंसू निकले। गला रुंध गया। वाह रे खुदा। ये मैं क्या देख रहा हूँ। कितने दिनों से यह आदमी यहां फटेहाल पड़ा है। अब कहीं भागने की हिम्मत भी नहीं रही इसकी।

मैं घर ले आया उन्हे। लाश जैसे थे वह। कार की सीट बेल्ट से बांधकर। बार–बार लुढ़क जाते। अब तो सब शांत हैं। जिंदा हैं बस। मुझे भी बहुत बार नहीं पहचानते।

पता नहीं किस बात का इंतजार है उन्हे। तरस आता है। जीवन की नियति यही होती है क्या? तमाम उम्र कितनी भाग–दौड़ करते हैं हम। चोरी, डाका, फरेब. झगड़े।

और अंत में क्या शेष रहता है। एक शून्य, एक गुमशुदगी, एक लामकानी, खोई हुई अस्मिता। अपने आप में कोई इतना लापता कैसे हो सकता है भला।

मनुष्य सदा अपनी मातृभाषा में ही विचार करता है। इसलिए अपनी भाषा सीखने में जो सुगमता होती है दूसरी भाषा में हमको वह सुगमता नहीं हो सकती।

– डॉ. मुकुन्दस्वरूप वर्मा

मेरी प्यारी भाभी

विनय कुमार गर्ग

तीन–चार दिनों से ही घर में बड़ी गहमा–गहमी सी चल रही थी, क्योंकि ठीक तीन दिन बाद 15 फरवरी को मेरे प्यारे भतीजे गोलू का दूसरा जन्म दिन जो मनाया जाना था। गोलू का पहला जन्मदिन तो हम लोग मना नहीं पाए थे क्योंकि ठीक जन्मदिन वाले दिन की सुबह ही मां जी को मंदिर जाते वक्त एक गाड़ी वाले ने पीछे से टक्कर मार दी थी जिससे उनके सिर में काफी चोट लगने से सभी को पूरे दिन अस्पताल में ही रहना पड़ा था और माँ जी को तो पूरे एक हफ्ते बाद अस्पताल से छुट्टी मिली थी। इसलिए इस बार भैया–भाभी जन्मदिन मनाने की हसरत में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहते थे और हो भी क्यों ना, गोलू का जन्म भाभी की शादी के बारह साल बाद जो हुआ था। और उन बारह सालों में भाभी ने कैसे एक–एक दिन अपने आंसू छिपाकर गुजारे थे,यह मैं या मेरे भैया ही जानते थे। तब कहीं जाकर बारह साल बाद वेलेंटाइन–डे के अगले दिन, 15 फरवरी को चांद से गोल–गोल चेहरे वाले गोलू का जन्म हुआ और भाभी को मानो नया जीवन मिल गया। तभी से हमारे घर में नित नई रौनक व चहल–पहल रहने लगी थी।

इस बार भाभी ने मन में ठान लिया था कि गोलू के इस दूसरे जन्म दिन को यादगार बनाना है और इसलिए उन्होने अपने पीहर वालों को, हमारे सभी रिश्तेदारों को व अन्य सभी जान–पहचान वालों को भी निमंत्रित कर लिया था और इसी अवसर के लिए जमकर शॉपिंग की जा रही थी। जन्मदिन में आने वाले सभी मेहमानों के लिए रिटर्न–गिफ्ट भी खरीदे जा चुके थे। गोलू के लिए जन्मदिन पर पहनने के लिए बहुत ही खूबसूरत डिजाइनर ड्रेस खरीदी गई थी। केटरिंग के लिए शहर के ही मशहूर पूरनचंद हलवाई को मेहमानों की खातिर–तवज्जो का जिम्मा सौंपा गया था। भाभी ने जन्मदिन के कार्यक्रम की इतनी जबरदस्त प्लानिंग की थी कि आने वाले मेहमानों को भी इस मौके का बेसब्री से इंतजार था। साथ ही एक और बड़ी खुशखबरी भी थी कि कि भाभी की छोटी बहन की शादी 13 फरवरी को चंडीगढ़ में होने जा रही थी और शादी में जाने की तैयारियां भी साथ में चल रही थी।

मेरी भाभी बहुत ही सूझ–बूझ वाली, जिम्मेदार, जिंदादिल, कोमल हृदया व निहायत ही खूबसूरत थी। उनके बाल इतने लंबे और सुंदर थे कि जो भी उन्हे देखता उनकी तारीफ जरूर करता था। मुझे भी कभी–कभी भाभी से ईर्ष्या होती थी कि मेरे ऐसे बाल क्यूं नहीं हैं। भाभी के व्यक्तित्व का दूसरा महत्वपूर्ण पहलू उनकी सादगी थी क्योंकि जो भी उनके संपर्क में आता था उनकी सादगी का कायल हो जाता था। भाभी का व्यक्तित्व बड़ा ही प्रभावशाली था और उनके व्यक्तित्व में बचपन में झेली कठिनाईओं की छाप भी दिखाई देती थी। भाभी अपनी तीन बहनों के परिवार में सबसे बड़ी थी और तब भाभी मात्र सत्रह वर्ष की रही होंगी जब उनके पिता का साया सिर से उठ गया और ना चाहते हुए भी अपने पूरे परिवार की जिम्मेदारी भाभी के मासूम कंधों पर आन पड़ी थी। भाभी के पिता डाक विभाग में पोस्टमैन थे, जिस कारण वे कुछ खास जमा पूंजी नहीं बचा पाए थे और ऐसी परिस्थिती में उनके पिता के देहांत होने से, परिवार पर मानो दुखों का पहाड़ ही टूट पड़ा था। पिता की मृत्योपरांत, डाक विभाग से उनकी मां को पेंशन भी

नामचारे की ही मिलती थी। उनकी माँ अनपढ़ थी इसलिए डाक विभाग में भाभी को या उनकी मां को दिवंगत के स्थान पर नौकरी नहीं मिल पाई थी वैसे भी डाक विभाग में उनका कोई पैरोकार नहीं था। उनकी मां बेचारी थोड़ी बहुत सिलाई–बुनाई जानती थी जिससे उनके परिवार को नामचारे का ही सहारा मिलता था। अतः भाभी को 12वीं कक्षा के तुरंत बाद प्राइवेट जॉब करनी पड़ी। उससे भी मात्र दो–ढ़ाई हजार रुपए मुश्किल से ही मिल पाते थे। मगर इतने बुरे हालात में भी भाभी ने अपनी ग्रेजुएशन की पढ़ाई, छोटी बहनों की पढ़ाई बदस्तूर जारी रखी और इसी तरह एक–एक करके भाभी के परिवार ने पूरे पांच साल विषम परिस्थितियों में संघर्ष किया और साथ ही भाभी अपना ग्रेजुएशन पूरा कर कंपटीशन की तैयारी भी करती रही और एक लंबे संघर्ष के बाद वो सुखद लम्हा भी आखिर आ ही गया, जिसका उन्हे व उनके परिवार को बेसब्री से इंतजार था। भाभी का सिलेक्शन उनके ही शहर मोहाली में एस.बी.आई. में क्लर्क के पद पर हो गया जिससे उनके परिवार का जीवन सहज हो गया तथा बैंक में नौकरी करते–करते ही उन्होने अपनी दोनों छोटी बहनों को अच्छी तालीम भी दिलवाई।

भाभी की मेरे भैया से शादी भी मात्र एक संयोग ही था। उन दिनों भैया अपनी पोस्ट ग्रेजुएशन की पढ़ाई पूरी कर सरकारी नौकरी न मिलने पर लुधियाना की एक प्राइवेट कंपनी में सुपरवाइजर लग गए थे और भैया वहीं लुधियाना में किराए पर एक कमरा लेकर रहने लगे जहां का मकान मालिक भाभी का मामा था। भैया के व्यवहार व रहन–रहन देखकर उन्होने अपनी भांजी (मेरी भाभी) के लिए भैया को पसंद कर लिया और वही भाभी का रिश्ता घर लेकर आए थे। हमारे परिवार वालों ने भी भाभी को अपनाकर स्वयं को सौभाग्यशाली महसूस किया। भैया भी भाभी जैसी जीवन संगिनी पाकर खुद पर रश्क करते थे। भाभी की सीरत भी ऐसी थी कि जिसने मानों देना ही सीखा था। मैंने पिछले 14 सालों में कभी भी भाभी को किसी से खुद के लिए कुछ भी मांगते नहीं देखा था। बीच–बीच में भाभी जब अपने घर मिलने जाती तो सभी को बड़ा खालीपन सहसूस होता था वह चाहे कोई घर का सदस्य हो या कोई अड़ोसी–पड़ोसी, किसी से भी मानो भाभी की गैर मौजूदगी बर्दास्त नहीं होती थी। और भैया को तो मैं बहुत ज्यादा छेड़ती थी, क्योंकि उन दिनों भाभी की याद में, भैया बहुत ही चिड़–चिड़े हो जाते थे, और फिर भाभी के वापिस आने पर ही नॉर्मल हो पाते थे।

आज 12 फरवरी की तारीख थी और कल 13 फरवरी को भाभी की सबसे छोटी बहन की शादी थी, इसलिए हम सभी लोग चंडीगढ़ शादी में शरीक होने के लिए चले गए। भाभी ने एक मां की तरह जाते ही अपनी छोटी बहन की शादी के सारे कार्यों का जिम्मा अपने सिर ले लिया और अपनी सुगढ़ता के चलते शादी जैसे बड़े कार्य को निर्विघ्न संपन्न करवाया। भाभी के बहुत ज्यादा एनर्जेटिक व जिंदादिल होने के कारण, शादी के अगले ही दिन, 14 फरवरी को भैया के कहने पर तथा उनकी कनाडा से आई मंझली बहन व उसके पति द्वारा जबरदस्ती करने पर वें ना नहीं कर सकी तथा सभी के साथ वैलेंटाइन–डे मनाने के लिए चारों चंडीगढ़ से परवाणु (हिमाचल में) चले गए जहां सभी ने काफी इंज्वाए किया फिर वापसी में लौटते हुए वृंदावन गार्डन में भी घूमें। वहीं वृंदावन गार्डन के बाहर, मिनी रेसिंग कार (गो–कार्ट) का एक सुंदर सा पार्क भी बना था। भाभी तो जैसे वेलेंटाइन डे का एक पल भी बिना मस्ती के गँवाना

नहीं चाहती थी और वही पहली बार भैया से जिद कर बैठी कि चलो हम भी गो कार्टिंग के लिए जाएंगे। भैया तो भाभी के एक इशारे पर जान छिड़कते थे सो वे तुरंत ही तैयार हो गए और तुरत–फुरत उन्होने दो गो–कार्ट किराए पर ले लिए क्योंकि दोपहर के तीन बजे थे और पांच बजे पार्क के बंद होने का टाइम था। एक गो–कार्ट में भैया–भाभी बैठ गए व दूसरी गो–कार्ट में उनकी मंझली बहन व बहनोई बैठ गए। गो–कार्ट के स्टाफ ने चारों को हैलमेट व जरुरी सेफ्टी गियर्स दे दिए। फिर शुरू हुआ मस्तियों का दौर, आज भैया–भाभी दोनों ही बहुत खुश थे क्योंकि दोनों ही एक लंबी अवधि के बाद फ्री होकर एंज्वाए कर रहे थे। वैसे भी दोनों एक दूसरे को टूटकर प्यार करते थे। भाभी दिल थी तो भैया धड़कन थे, भैया शरीर थे तो भाभी जान थी। आज जैसे दोनों अपनी जिंदगी के बेहद खूबसूरत लम्हों को जी रहे थे। भैया–भाभी के साथ–साथ, भैया की साली व साढू भी पूरा इंज्वाए कर रहे थे। कभी भैया अपनी गाड़ी आगे ले जाते तो कभी किसी मोड़ पर उनके साढू उन्हें ओवरटेक कर आगे निकल जाते, दोनों बहनें मानो अतीत के झंझावातों से निकलकर आनंद की चरम सीमा का आनंद ले रही थी। इसी चुहलबाजी में, एक समय ऐसा आया जब भैया ने भी जोश में आते हुए, ऐसे ही एक मोड़ पर, अपने साढू को मात देने के लिए तेजी से उनकी ओवरटेक कर, आगे निकलने का प्रयास किया और अपनी गाड़ी को इतनी तेजी से काटा कि उनके बगल में बैठी भाभी को, जोर का झटका लगा और उनके सिर पर बंधा हेलमेंट, तेजी से उनके सिर से निकलकर दूर जा गिरा और उनके लंबे बालों में बंधा रबर बैंड भी इसी झटके से निकल कहीं दूर गिर गया और भाभी के लंबें बाल खुल गए और गाड़ी के पिछले भाग में खुले एक्सल में फंसते चले गए और तब तक भैया को तो जैसे इस सबका ऐहसास ही नहीं था, उनको होश तो तब आया जब उन्होने भाभी की तेज चींख सुनी, चीख सुनते ही उन्होने अपनी गो–कार्ट को तुरंत ब्रेक लगाकर रोक दिया, मगर तब तक बहुत देर हो चुकी थी और बालों के साथ भाभी की खोपड़ी सिर से अलग हो चुकी थी। ऐसा भयानक मंजर देखकर भैया की आंखे फटी की फटी रह गई, पार्क में कोहराम मच गया और तुरंत आनन–फानन में गो–कार्ट की टीम ने भाभी को बेहोशी की हालत में नजदीक के प्राइवेट अस्पताल में पहुंचा दिया, मगर खून काफी बह गया था ओर भाभी की हालत नाजुक होने के कारण उन्हे पी.जी.आई. रैफर कर दिया गया। मगर लगता था कि जैसे होनी को कुछ और ही मंजूर था और फिर वही हुआ जिसका हमें डर था, भाभी ने पी.जी.आई. पहुंचने से पहले ही, रास्ते में दम तोड़ दिया।

भैया तो जैसे पत्थर का बुत बन गए थे। वो कभी भाभी की मृत देह देखते तो कभी उन्हे छू–छू कर जगाने की कोशिश करते। मगर अब उनकी सभी कोशिशें बेकार थी, क्योंकि उन्हे दिलोंजान से प्यार करने वाली उनकी बेटर हाफ (पत्नी) उन्हे हमेशा–हमेशा के लिए छोड़कर बहुत दूर जा चुकी थी। इतने खूबसूरत रिश्ते का ऐसा भयानक अंत होगा किसी ने दूर–दूर तक नहीं सोचा था और भैया तो जैसे इस हादसे से पागल से हो गए थे, वक्त के मरहम, गोलू के प्यार व उसकी जिम्मेदारी और सभी घरवालों के भरसक प्रयासों के बावजूद भी भैया बमुश्किल ही खुद को संभाल पाए, बस जैसे हंसना ही भूल गए हों और उनके शरीर से किसी ने सांसे ही छीन ली हो। क्योंकि भैया आज भी भाभी की मौत का जिम्मेदार खुद को ही मानते हैं और ये पश्चाताप की आग पता नहीं कैसी थी, जिससे हमारा पूरा परिवार झुलस गया।

अजनबी हमसफर की अधूरी कहानी

संजय कुमार आर्यन

वो ट्रेन के रिजर्वेशन के डिब्बे में बाथरुम के तरफ वाली सीट पर बैठी थी। उसके चेहरे से पता चल रहा था कि थोड़ी सी घबराहट है कि कहीं टी.टी.ई. (टिकट निरीक्षक) ने आकर पकड़ लिया तो वह बार बार पीछे पलट पलट कर टीटीई के आने का इंतजार करती रही। शायद सोच रही होगी कि पैसे तो नही हैं, शायद रिक्वेस्ट करने पर निपटारा हो जाए। देखकर तो महेश को यही लग रहा था कि शायद जनरल डिब्बे में चढ नहीं पाई, इसलिए रिजर्वेशन में आकर बैठ गई। सामान के नाम पर उसकी गोद में रखा एक छोटा सा थैला दिख रहा था। महेश बहुत देर तक कोशिश करता रहा पीछे से देखने की कि शायद चेहरा सही से दिख पाए लेकिन हर बार असफल ही रहा.....

फिर थोड़ी देर बाद वो भी खिड़की पर हाथ टिकाकर सो गयी। महेश भी वापस अपनी पत्रिका पढने में लग गया। लगभग एक घंटे बाद टी.टी.ई. आया और उसे हिलाकर जगाया " कहां जाना है बेटा?"

डरते हुए वो बोली, "अंकल दिल्ली तक जाना है"

टिकट है?

नहीं अंकल जनरल का है, लेकिन भीड़ के कारण चढ नहीं पाई इसलिए इसमें बैठ गई।

300 रु का पेनल्टी बनेगा..

ओह अंकल मेरे पास तो सिर्फ 200 रु ही है। पेनल्टी तो भरनी पड़ेगी??

सॉरी अंकल मैं अगले स्टेशन पर जनरल डब्बे में चली जाउंगी। मेरे पास सच में पैसे नहीं है। कुछ परेशानी आ गयी, इसलिए जल्दबाजी में घर से निकल आई और ज्यादा पैसे रखना भूल गई, बोलते–बोलते वो लड़की रोने लगी।

टी.टी.ई. आखिरकार 100 रु लेकर चला गया। महेश एकटक नजरों से ये बातचीतें सुन ओर देख रहा था। टीटीई के जाने के बाद उस लड़की के चेहरे पर उदासीनता एवं चिंता के भाव दिखने लगे। झट से बैग से पैन एवं कापी का एक पन्ना निकाला और लिखा कि " एक अजनबी हमउम्र लड़के के इस तरह तुम्हें 500 रु का नोट भेजना अजीब भी होगा और शायद तुम्हारी नजर में लगता भी, लेकिन तुम्हे इस तरह परेशान देखकर मुझे बेचैनी हो रही है। इसलिए यह 500 रु भेज रहा हुँ, तुम्हे कोई अहसान न लगे, इसलिए मैं अपना पता भी लिख रहा हुँ। जब तुम्हें सही लगे मेरे पते पर वापस भेज सकती हो। वैसे मैं नहीं चाहुँगा की तुम पैसे वापस करो।"

तुम्हारा अजनबी हमसफर....

महेश ने एक चाय वाले के हाथों उसे वो नोट और पत्र देने को कहा और चाय वाले को मना किया कि उसे न बताये कि मैने वो नोट भेजा है। नोट मिलते ही

उसने दो–तीन बार पीछे मुड़कर देखा कि कोई उसकी तरफ देखता हुआ नजर आए तो पता लग जाएगा कि किसने भेजा। लेकिन महेश तो नोट भेजने के बाद ही मुँह पर चादर डालकर लेट गया। थोड़ी देर बाद चादर का कोना हटाकर देखा तो उसके चेहरे पर मुस्कुराहट महसूस की। लगा जैसे कई सालों से इसे एक मुस्कुराहट का इंतजार था। उसकी आँखों की चमक ने महेश का दिल उसके हाथों में जाकर थमा दिया। फिर चादर का कोना हटा–हटा कर थोड़ी देर में उसे देखकर जैसे सांस ले रहा था। पता ही नहीं चला कि कब आँख लग गई। जब आँख खुली तो वो वहां नहीं थी। ट्रेन दिल्ली स्टेशन पर रुकी थी। उसके सीट पर एक छोटी सी पुर्ची रखी हुई थी। महेश झटपट सीट से उतरकर उसे उठा लिया और उस पर लिखा था।

थैन्क यू मेरे अजनबी हमसफर। आपका यह अहसान मैं जिंदगी भर नहीं भूलूंगी। वास्तव में मेरी मां का देहांत हो गया इसलिए आनन–फानन में घर जा रही हूँ। आज आपके पैसे से माँ का अंतिम दर्शन कर पाउँगी। आज से मैं आपकी कर्जदार हूँ, जल्द ही आपके पैसे लौटा दूँगी।

आपका अजनबी हमसफर

उस दिन से उसकी वो आँखें ओर मुस्कुराहट महेश की जीने की वजह थे। महेश हर रोज डाकिया से ये पूछता था कि कोई अजनबी नाम से पत्र आया है कि नहीं??

लगभग एक साल बाद उसका एक पत्र आया। .. लिखा था....आपका कर्ज अदा करना चाहती हूँ लेकिन खत के जरिए नहीं आपसे मिलकर। आप चाहे तो मुझे ''''''''''' पर काल कर सकते हैं। हम लोग 25 दिसंबर को अंतत अक्षरधाम मिल रहे है ठीक 10 बजे।.....

आपका अजनबी हमसफर

महेश मन ही मन मुस्कुराया और 25 दिसंबर का इंतजार करने लगा। 25 दिसंबर को लगभग 8 बजे महेश के एक मित्र ने फोन पर बताया कि भाई 11 बजे आना ताकि मालूम तो चले कि भाभी आपसे कितना प्यार करती है। देखते है गुस्सा होती है या इंतजार करती है। महेश ने उसकी बात मान ली और लगभग अपने कमरे करोलबाग से दस बजे निकला और क्रिसमस पर्व के कारण भारी भीड़ लगी हुई थी। सड़क पर पूरी तरह जाम था और उपर से ठंड ने पिछले 30 साल का रिकार्ड तोड़ दिया था। महेश तेजी से बाइक चलाते हुए अक्षरधाम जा रहा था तभी अचानक एक कार के गलत साइड जाने से मैंने बाइक रोक दी, तभी पीछे वाली कार ने धुंध की वजह से दिखाई न देने के कारण मुझे टक्कर मार दी। महेश का सीरीयस एक्सीडेट हुआ और कोमा में चला गया। लगभग एक साल बाद महेश को अपनी पुरानी यादें याद आने लगी। महेश ने तुरंत उसको फोन किया कि हैलो कौन .....?

मै अजनबी बोल रहा हूँ...

मेरी शादी हो चुकी है, इतना कहकर वो रोने लगी।

कम से कम इतना तो बता देते कि मैं 25 दिसंबर को नहीं आउँगा। हम लोग दूसरे दिन मिल लेते। मेरा फोन नम्बर तो आपके पास था, कम से कम एक फोन तो कर देते। एक चिट्ठी तो लिख देते.....???

उसने फोन पर लगातार प्रश्नों की झड़ी लगा दी।

महेश कैसे कहूँ कि मेरा 25 दिसंबर को दिल्ली में एक सीरियस एक्सीडेंट हो गया जिसके कारण मैं 6 माह तक कोमा में रहा। 6 माह के बाद मुझे होश आया। क्या तुम ये बर्दाश्त करती...??

महेश कहे कैसे "मैं दर्द को पास बिठाकर ही सोउँ जो तुझे लगता बारिश है, वो मैं हूँ जो रोउँ।

खुशियों से हम मिलना भूल गए

तुम इतना क्यों हमसे दूर गए।"

आप जिस तरह बोलते हैं, बातचीत करते हैं, उसी तरह लिखा भी कीजिए। भाषा बनावटी नहीं होनी चाहिए।

– महावीर प्रसाद द्विवेदी

हिंदी पखवाड़ा-2018

महालेखाकार के दिनांक 13.08.2018 के आदेशानुसार कार्यालय में दिनांक 01.09.2018 से 15.09.2018 तक हिंदी पखवाड़े का आयोजन किया गया। हिंदी पखवाड़े का शुभारंभ महालेखाकार महोदय द्वारा दीपक प्रज्जवलित कर किया गया। कार्यालय के कर्मचारियों द्वारा सरस्वती वंदना प्रस्तुत की गई। इस अवसर पर उपमहालेखाकार (प्रशा. / पेंशन / लेखा) तथा कार्यालय के वरिष्ठ अधिकारी / कर्मचारी भी उपस्थित रहे।

महालेखाकार महोदय ने अपने उदघाटन भाषण में कार्यालय के सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को अपना अधिकतम कार्यालयीन कार्य हिंदी में ही करने पर बल दिया तथा राजाभाषा विभाग द्वारा निर्धारित लक्ष्यों को पूरा करने हेतु हर संभव प्रयास करने का सुझाव दिया। उन्होने यह भी कहा कि केंद्रीय सरकार के कर्मचारी होने के नाते यह हमारा नैतिक दायित्व बनता है कि राजभाषा के उत्थान में हम अपना हर संभव सहयोग करें। उन्होंने सभी अधिकारियों / कर्मचारियों को पखवाड़े के दैरान आयोजित की जाने वाली प्रतियोगिताओं में बढ–चढ कर भाग लेने हेतु प्रेरित किया।

इस वर्ष पखवाड़े के दौरान हिदी निबंध लेखन, हिंदी शब्द ज्ञान, भाषण तथा स्वरचित कविता पाठ प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। इन प्रतियोगिताओं में कार्यालय के अधिकारियों / कर्मचारियों ने बढ–चढ कर भाग लिया। कार्यालय के श्री जसविंदर शर्मा, वरि. लेखा अधिकारी, श्री अनिल कुमार भारद्वाज, वरि. लेखा अधिकारी, श्रीमती सरोज बाला, वरि लेखा अधिकारी तथा श्री कर्ण सिंह रावत, लेखा अधिकारी ने निर्णायकों के रुप में अपने कर्तव्य का निर्वहन किया। हिंदी पखवाड़े की प्रतियोगिताओं के परिणाम निम्नलिखित हैः–

क्रमांक	प्रतियोगिता	विजेता का नाम एवं पदनाम	पुरस्कार
1.	हिंदी शब्द–ज्ञान	कुमारी रूबी, डीईओ	प्रथम
2.	हिंदी शब्द–ज्ञान	कुमारी खुशबू, डीईओ	द्वितीय
3.	हिंदी शब्द–ज्ञान	कुमारी सुमन मीना, लेखाकार	तृतीय
4.	हिंदी निबंध प्रतियोगिता	कुमारी रूबी, डीईओ	प्रथम
5.	हिंदी निबंध प्रतियोगिता	शशांक शर्मा, लेखाकार	द्वितीय
6.	हिंदी निबंध प्रतियोगिता	राहुल वर्मा, डीईओ	तृतीय
7.	हिंदी भाषण प्रतियोगिता	राजीव मेहता, वरिष्ठ लेखाकार	प्रथम
8.	हिंदी भाषण प्रतियोगिता	दिनेश कुमार तिवारी, डीईओ	द्वितीय
9.	हिंदी भाषण प्रतियोगिता	अरुणा अरोड़ा, वरिष्ठ लेखाकार	तृतीय
10.	हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता	सुनील कुमार गुप्ता, वरिष्ठ लेखाकार	प्रथम
11.	हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता	दिनेश कुमार तिवारी, डीईओ	द्वितीय
12.	हिंदी कविता पाठ प्रतियोगिता	रमेश चंद, एम.टी.एस.	तृतीय

हिंदी पखवाड़े के समापन समारोह के अवसर पर सहायक लेखा अधिकारी (हिंदी) द्वारा गृह मंत्री का संदेश पढ़ा गया। इसके पश्चात महालेखाकार महोदय ने प्रतियोगिताओं के विजेताओं को पुरस्कार वितरित किए। वर्ष पर्यंत हिंदी में सराहनीय कार्य करने वाले अनुभागों के प्रभारियों को भी इस अवसर पर पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम के अंत में उपमहालेखाकार (प्रशासन) द्वारा धन्यवाद भाषण के साथ हिंदी पखवाड़े का समापन किया गया।

कार्यालयीन समाचार

खेल समाचार एवं अन्य गतिविधियां

1. श्री अंकित कौशिक, व.ले., श्री अर्पित पन्नु, लिपिक तथा श्री जसकरणदीप सिंह, लिपिक ने दिनांक 20.04.2018 से 28.04.2018 तक ऑल इंडिया ओपन नाईट क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया।
2. दिनांक 02.05.2018 को महालेखाकार पंजाब बल्ड डोनेशन एसोशिएशन द्वारा पी.जी.आई. चंडीगढ़ की मदद से रक्तदान शिविर लगया गया जिसमें कार्यालय के अधिकारियों/कर्मचारियों ने रक्त दान किया।
3. श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार तथा श्री जसकरणदीप सिंह, लिपिक ने दिनांक 18.05.2018 से 24.05.2018 तक देहरादून में आयोजित कोचिंग कैम्प में भाग लिया तथा 25 मई से 10 जून 2018 तक ऑल इंडिया उत्तराखंड गोल्ड कप क्रिकेट टूर्नामेंट में भाग लिया।
4. श्री अंकित कौशिक, वरिष्ठ लेखाकार ने दिनांक 01 से 10 मई 2018 तक धर्मशाला में आयोजित रणजी ट्रॉफी कैंप (एचपीसीए) में भाग लिया।
5. श्री आकाश वशिष्ठ, लिपिक ने दिनांक 20.05.2018 से 31.05.2018 तक धर्मशाला में आयोजित रणजी ट्रॉफी कैंप (एचपीसीए) में भाग लिया।
6. दिनांक 21 मई 2018 को प्रातः 11:00 बजे कार्यालय के परीक्षा भवन में आतंकवाद विरोधी दिवस पर शपथ ग्रहण समारोह का आयोजन किया गया।
7. श्री दिनेश मान, श्री जगरूप सिंह तथा श्री ध्यान सिंह, वरिष्ठ लेखाकारों ने दिनांक 01.06.2018 से 03.06.2018 तक नई दिल्ली सीएजी सिलेक्सन ट्रायल में भाग लिया।
8. श्री अंकित कौशिक, व.ले. ने दिनांक 14.06.2018 से 10.07.2018 तक सीनियर स्टेट चैंपियनशिप/रणजी ट्रॉफी चयन खेलों में भाग लिया।
9. श्री गौरव देशवाल तथा श्री कशिश लिपिकों ने दिनांक 12 से 24 जून 2018 तक बेंगलुरू और हैदराबाद में ऑल इंडिया सीनियर रैंकिंग टूर्नामेंट में भाग लिया।
10. कार्यालय प्रधान महालेखाकार (लेखा परीक्षा) पंजाब, कार्यालय महालेखाकार (ले. व ह.) पंजाब एवं यू.टी. चंडीगढ़ द्वरा संयुक्त रुप से दिनांक 21.06.2018 को कार्यालय के परीक्षा भवन में योग दिवस मनाया गया।
11. दिनांक 27.8.2018 से 29.8.2018 तक उत्तर क्षेत्रीय बैडमिंटन प्रतियोगिता (आई.एण्ड ए.डी) 2018–19 का आयोजन महालेखाकार (ले. व ह.) पंजाब की मेजबानी में चंण्डीगढ़ में किया गया। महालेखाकार पंजाब की संयुक्त टीम ने भाग लिया तथा उप विजेता का खिताब हासिल किया।

नियुक्तियां

(प्रशासन–1 के अनुसार 01–04–2018 से 30–09–2018)

क्रम संख्या	नाम (सर्व श्री/श्रीमती)	पदनाम	नियुक्ति की तिथि
1.	सूर्य प्रकाश बिशनोई	लेखाकार	02.04.2018
2.	राजेश कुमार मीणा	लेखाकार	02.04.2018
3.	रामअवतार मीणा	लेखाकार	03.04.2018
4.	अनिल शर्मा	लेखाकार	04.04.2018
5.	रवि रावत	लेखाकार	05.04.2018
6.	मुकेश कुमार	डीईओ	10.04.2018
7.	नरेश चन्द्र शर्मा	लेखाकार	11.04.2018
8.	गणेश कुमार मीणा	लेखाकार	11.04.2018
9.	शशांक	लेखाकार	13.04.2018
10.	पूनम खत्री	डी.ई.ओ.	20.04.2018
11.	सतीश कुमार	डी.ई.ओ.	07.05.2018
12.	साक्षी भाटिया	लेखाकार	07.06.2018
13.	अपूर्वा	लेखाकार	22.06.2018
14.	फूल सिंह	क.हि.अ.	25.06.2018
15.	विनोद कुमार सरोहा	लेखाकार	26.06.2018
16.	नितीश पंवार	लेखाकार	28.06.2018
17.	संदीप राणा	लेखाकार	29.06.2018
18.	तरलोचन सिंह	एम.टी.एस.	17.07.2018
19.	गौरव कुमार	एम.टी.एस	17.07.2018
20.	शुभम	एम.टी.एस.	18.07.2018

क्रम संख्या	नाम (सर्व श्री / श्रीमती)	पदनाम	नियुक्ति की तिथि
21.	राकेश कुमार	एम.टी.एस.	23.07.2018
22.	नितीश कुमार	एम.टी.एस.	23.07.2018
23.	अनिल कुमार मीणा	एम.टी.एस.	24.07.2018
24.	जिशान खान	एम.टी.एस.	24.07.2018
25.	दीपक कुमार	एम.टी.एस.	24.07.2018
26.	आशीष	एम.टी.एस.	24.07.2018
27.	राजीव रंजन मिश्रा	एम.टी.एस.	30.07.2018
28.	दीपक कुमार	एम.टी.एस	31.07.2018
29.	किशोर चन्द्र	एम.टी.एस.	01.08.2018
30.	राजेन्द्र कुमार मीणा	स.ले.अ.	01.08.2018
31.	दीपक शर्मा	एम.टी.एस.	02.08.2018
32.	राकेश कुमार	एम.टी.एस.	03.08.2018
33.	रितेश कुमार जायसवाल	एम.टी.एस.	03.08.2018
34.	सितेश	एम.टी.एस.	07.08.2018
35.	विनय कुमार	एम.टी.एस.	08.08.2018
36.	अविनास कुमार	एम.टी.एस.	08.08.2018
37.	पायलेट मीना	लेखाकार	08.08.2018
38.	जयप्रकाश मीणा	लेखाकार	09.09.2018
39.	अभिलाष	लेखाकार	07.09.2018
40.	संदीप कुमार	एम.टी.एस.	07.09.2018

पदोन्नतियां

लेखा अधिकारी से वरिष्ठ लेखा अधिकारी के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	पदोन्नति की तिथि
1.	राजबाला	02.04.2018

सहायक लेखा अधिकारी से लेखा अधिकारी के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	पदोन्नति की तिथि
1.	त्रिलोचन सिंह	02.04.2018
2.	मधुबाला सैनी	02.04.2018
3.	जयगोपाल वर्मा	04.09.2018
4.	वेद प्रकाश	13.06.2018
5.	राकेश कुमार शर्मा	26.09.2018
6.	अनीता रानी	26.09.2018

वरिष्ठ लेखाकारों व मंडलीय लेखाकारों से सहायक लेखा अधिकारी के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	पदोन्नति की तिथि
1.	रोहित सैनी	02.04.2018
2.	राहुल वत्स	02.04.2018
3.	प्रियंका	02.04.2018
4.	सौरव	03.04.2018
5.	सुरेंद्र सिंह यादव	13.04.2018
6.	स्नेहा भारती	13.04.2018
7.	अरविंद कुमार सैनी	27.09.2018
8.	गुरप्रीत सिंह	27.09.2018

वरिष्ठ लेखाकार से पर्यवेक्षक के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	पदोन्नति की तिथि
1.	भुवन कोटियाल	01.05.2018

लेखाकार से वरिष्ठ लेखाकार के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	पदोन्नति की तिथि
1.	चंदीप सिंह	02.04.2018
2.	संजु	02.04.2018
3.	समदर्श	02.04.2018
4.	संजय कुमार	02.04.2018

लिपिक से लेखाकार के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	पदोन्नति की तिथि
1.	गुरदेव राज	02.04.2018

डी.ई.ओ. ग्रेड–ए से डी.ई.ओ. ग्रेड–बी के पद पर पदोन्नति

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	पदोन्नति की तिथि
1.	हरिओम भूरा	02.04.2018

विदेशी भाषा में शिक्षा होने के कारण हमारी बुद्धि भी विदेशी हो गई है।
– माधवराव सप्रे

सेवानिवृत्तियां

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	जयश्री, कल्याण अधिकारी	30.04.2018
2.	भूपिन्द्र कौर, व.ले.	30.04.2018
3.	हर्ष कुमार कोहली, पर्यवेक्षक	30.04.2018
4.	रामचंद गर्ग, व.ले.	31.05.2018
5.	संतोष कुमारी, स.ले.अ.	30.06.2018
6.	हंस राज छाबड़ा, व.ले.	30.06.2018
7.	किरण बाला मोगा, व.ले.	31.07.2018
8.	रिषि राम, व.ले.	31.07.2018
9.	रोशन लाल, व.ले.अ.	31.08.2018
10.	सुरजीत सिंह, व.ले.	31.08.2018
11.	सुदर्शन सिंह, व.ले.	31.08.2018
12.	राजीव कुमार डोगरा, ले.अ.	30.09.2.018
13.	राजीव कुमार शर्मा, व.क.ऑ.	30.09.2018
14.	श्रीराम, व.ले.	30.09.2018
15.	भूलन प्रसाद, दफ्तरी	30.09.2018
16.	प्रेम लाल, एम.टी.एस.	30.09.2018

स्वैच्छिक सेवानिवृत्तियां

क्रम संख्या	नाम सर्वश्री / श्रीमती	सेवानिवृत्ति की तिथि
1.	बलबीर चंद, वरिष्ठ लेखाकार	31.08.2018
2.	ओपिंद्र सिंह, वरि. लेखा अधिकारी	28.08.2018

सभी सेवा निवृत्त अग्रज साथियों की दीर्घायु तथा उनके सुखी, स्वस्थ सेवानिवृत्त जीवन के लिए 'अंकुर' परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

अलविदा

श्री राजकुमार–1, वरिष्ठ लेखाकार दिनांक 23.08.2018 को अपनी जीवन–यात्रा पूरी कर उस अखंण्ड ज्योति में समा गये। अंकुर परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा के प्रति भाव–भीनी श्रद्धांजलि।

वर्ष 2019–20 हेतु, कार्यालय में राजभाषा हिन्दी के प्रयोग संबंधी मुख्य लक्ष्य

कार्य विवरण	"क" क्षेत्र	"ख" क्षेत्र	"ग" क्षेत्र
हिंदी में मूल पत्राचार (ई-मेल सहित)	1. क क्षेत्र से क क्षेत्र को 100% 2. क क्षेत्र से ख क्षेत्र को 100% 3. क क्षेत्र से ग क्षेत्र को 65% **4.** क क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/ व्यक्ति 100%	1 ख क्षेत्र से क क्षेत्र को 90% 2 ख क्षेत्र से ख क्षेत्र को 90% 3 ख क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% **4.**ख क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 90%	1 ग क्षेत्र से क क्षेत्र को 55% 2 ग क्षेत्र से ख क्षेत्र को 55% 3 ग क्षेत्र से ग क्षेत्र को 55% **4.** ग क्षेत्र से क व ख क्षेत्र के राज्य/संघ राज्य क्षेत्र के कार्यालय/व्यक्ति 55%
हिंदी में प्राप्त पत्रों का उत्तर हिंदी में दिया जाना	100%	100%	100%
हिंदी में टिप्पण	75%	50%	30%
हिंदी माध्यम से प्रशिक्षण कार्यक्रम	70%	60%	30%
हिंदी टंकण करने वाले कर्मचारी एवं आशुलिपिक की भर्ती	80%	70%	40%
हिंदी में डिक्टेशन/की बोर्ड पर सीधे टंकण (स्वयं तथा सहायक द्वारा)	65%	55%	30%
हिंदी प्रशिक्षण (भाषा, टंकण, आशुलिपि)	100%	100%	100%
द्विभाषी प्रशिक्षण सामग्री तैयार करना	100%	100%	100%
राजभाषा संबंधी बैठकें (क) हिंदी सलाहकार समिति (ख) नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (ग) राजभाषा कार्यान्वयन समिति		वर्ष में 2 बैठकें वर्ष में 2 बैठकें (प्रति छमाही एक बैठक) वर्ष में 4 बैठकें (प्रति तिमाही एक बैठक)	
कोड, मैनुअल, फॉर्म, प्रक्रिया और साहित्य का हिंदी अनुवाद	100%		
वेबसाइट द्विभाषी हो	100%	100%	100%
नागरिक चार्टर तथा जन सूचना बोर्डों आदि का प्रदर्शन द्विभाषी हो	100%	100%	100%

कार्यालय द्वारा आयोजित उत्तर क्षेत्रीय बैडमिन्टन (आई.ए. एण्ड ए.डी.) 2018–19 प्रतियोगिता के दौरान खिलाड़ियों से मुख्य अतिथि श्रीमती नमिता सेखों को खिलाड़ियों का परिचय कराते हुए श्री फ़ैसल इमाम, महालेखाकार।

कार्यालय द्वारा आयोजित उत्तर क्षेत्रीय बैडमिन्टन (आई.ए. एण्ड ए.डी.) 2018–19 प्रतियोगिता का एक दृश्य।

ध्वजारोहण

चंडीगढ़ में स्थित सुखना झील का दृश्य

राजभाषा कार्यान्वयन समिति,
कार्यालय महालेखाकार (लेखा एवं हकदारी)
पंजाब एवं यू.टी. चण्डीगढ़ – 160017

http://www.agpunjab.gov.in/hindi.html